



- » देखने को मिला भारतीय वायुसेना के शौर्य और पराक्रम का अद्भुत नजारा
- » टीम के विमानों ने थोड़ी दूरी बनाए रखते हुए भरी उड़ान
- » युवाओं में देशभक्ति की भावना को प्रबल करना ही इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य

SARAF	
सोना	: 9,125
चांदी	: 110.00

(नोट : सोना 22 केरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

मृतकों के परिजनों से मिले पश्चिम बंगाल के गवर्नर

NEW DELHI : शनिवार को पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने मुर्शिदाबाद जिले में बक्क अभिनियम के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा में मारे गए एक व्यक्ति और उसके बेटे के परिजनों से मुलाकात की और उन्हें हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। बता दें कि हरगोविंद दास और चंदन दास के शव शमशेरगंज के जाफराबाद इलाके में उनके घर में पाए गए थे और शरीर पर चाकू से वार के कई निशान थे। बोस ने मृतकों के परिजन से मुलाकात के बाद सवाददाताओं से कहा, मैं अनुरोधों पर गौर करूंगा। तीन से चार सुझाव मिले हैं। उन्होंने इलाके में बीएसएफ की तैनाती की मांग की है। मैं इस मामले को उचित अधिकारियों के समक्ष उठाऊंगा। निश्चित रूप से कुछ ठोस कार्रवाई की जाएगी।

भूकंप का दिल्ली व जम्मू कश्मीर में दिखा असर

NEW DELHI : शनिवार को अफगानिस्तान में दोपहर 12:17 बजे रिक्टर पैमाने पर 5.8 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप का असर जम्मू-कश्मीर और दिल्ली-पनसीआर तक महसूस किया गया। हालांकि जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक भूकंप का असर जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्सों में भी महसूस किया गया। श्रीनगर में एक स्थानीय व्यक्ति ने बताया- मैंने भूकंप महसूस किया। मैं दफ्तर में था, तभी मेरी कुर्सी हिली। कुछ इलाकों से लोगों को घरों और ऑफिस से बाहर भागते देखा गया। थानेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, भूकंप सतह से 86 किलोमीटर नीचे आया।

राजधानी में पहली बार हुआ अद्भुत एयर शो का आयोजन, वायुसेना के जहाजों ने हवा में धुरं से लहराया तिरंगा

रांची में गूंजी लड़ाकू विमानों की बुलंद आवाज

PHOTON NEWS RANCHI :

शनिवार को रांची के लोगों ने एक ऐतिहासिक दृश्य देखकर रोमांचकारी अनुभव किया। जब भारतीय वायुसेना की सूर्यकिरण एयरोबैटिक टीम ने आर्मी ग्राउंड खोजटोली, नामकुम के ऊपर अपने हैरतअंगेज करतबों से आसमान को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। यह पहली बार था, जब राजधानी रांची में इतने भव्य स्तर पर वायुसेना का एयर शो आयोजित किया गया। एयर शो में सूर्यकिरण टीम के जांबाज पायलटों ने आसमान में लूप, क्रासिंग मूव्स और हार्ट शॉप जैसी अद्भुत आकृतियों से दर्शकों का दिल जीत लिया। विमानों के पीछे

सूर्यकिरण टीम के जांबाज पायलटों ने हैरतअंगेज करतब से कर दिया रोमांचित, दर्शकों का जीता दिल

सुबह से जुटने लगी थी भीड़

एयर शो को देखने के लिए सुबह से ही हजारों की संख्या में लोग नामकुम की ओर जाते दिखे। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने कार्यक्रम का आनंद लिया। इस दौरान नामकुम और आसपास के इलाकों में भारी ट्रैफिक जाम की स्थिति बन गई, जिससे स्थानीय प्रशासन और ट्रैफिक पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी। सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए थे और कार्यक्रम स्थल की ओर जाने वाली सड़कों पर गाड़ियों की एंट्री रोक दी गई थी।



छोड़े गए रंग-बिरंगे धुरं से तिरंगे दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। शो के दौरान सूर्यकिरण टीम के विमानों ने थोड़ी दूरी बनाए रखते हुए उड़ान भरी, जो उनकी अनुशासन और कौशल का प्रतीक था।

केंद्रीय मंत्री और एयर चीफ मार्शल का सम्मान

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति की भावना को प्रबल करना और भारतीय वायुसेना के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम में स्कूली छात्र-छात्राएँ, कॉलेज के युवा, सेना के पूर्व अधिकारी, स्थानीय नागरिक और कई गणमान्य अतिथि शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह का जिला प्रशासन की ओर से पुष्प गुच्छ और मोमेटो देकर स्वागत किया गया। शो में राज्य सरकार के वरीय अधिकारी और पुलिस पदाधिकारी भी मौजूद थे। बुंदू प्रखंड के अमनबुरु गांव से पीपीटीजी समुदाय के परिवारों को विशेष आमंत्रण

पर एयर शो में शामिल किया गया। उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री के निर्देश पर उनके आवागमन की विशेष व्यवस्था की गई थी। इस समुदाय के लोगों ने पहली बार आसमान में विमानों को इस तरह के हैरतअंगेज करतब करते देखा और इसे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बताया। रांची में हो रहे भव्य एयर शो को लेकर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रांचीवासियों, स्कूल प्रबंधकों, कॉलेज प्राचार्यों और प्रशासनिक अधिकारियों को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यह शो भारतीय वायुसेना के शौर्य और पराक्रम को जानने का ऐतिहासिक अवसर है, जो पूरी तरह निःशुल्क है।

नौकरशाही



ब्रजेश मिश्र

झारखंड में नौकरशाही के कामकाज का अपना तरीका है। कब, कहाँ, किस दिशा में किन्ना करना है, यह जानना ही यहाँ सबसे बड़ी कठिनाई है। कई बार विपरीत दिशा में लगाई गईं डैड मौजिल से बहुत दूर पहुँचा देती हैं। जाने क्या कुछ रहा है इतिहास, द फोटोन न्यूज के एजीबुडिय रिडटर की कलम से।

प्रोजेक्ट बनाम प्रोसेस

गुरु मंत्रालय की सीढ़ी चढ़ रहे थे। उतरने के दौरान पल्लेर के बीचों-बीच अमना-सामना हो गया। अभिवादन संबोधन के साथ बात शुरू की। पूछा- बड़े दिनों बाद इधर दिखे गुरु? गुरु ने स्वभावगत उत्तर दिया। बोले, अरे अपने भी कुछ लोग बिल्डिंग में ऊपर-नीचे बैठते हैं। कभी-कभार मिलना-मिलाना होता रहता है। यह दीगर है कि एकबीर पर कैपस में ली गई सेल्फी अपलोड नहीं करता। गुरु के वाक्य में बड़ा व्यंग्य था। वह मौजूदा दौर की हकीकत बयां कर रहे थे। गुरु को सहज करना जरूरी था। लिहाजा साथ चलने का ऑफर दिया। कहा- गुरु चलिए पहले आपको चाय पिलाते हैं। फिर मिलना-जुलना चलता रहेगा। गुरु सहजता से साथ हो लिए। दरअसल, सबबों का भी अपना एक कंफर्ट लेवल होता है। इसमें एक-दूसरे की मर्जी की मौन स्वीकृति होती है। गुरु के साथ रिश्ता इसी आयाम तक पहुँच गया था। साथ लौटते हुए अबकी सवाल गुरु ने पूछा, तुम बताओ



कहाँ आए थे? गुरु से बात छिपाई नहीं जा सकती थी। सो, सच-सच बोल दिया। गुरु अखबार में एक अभियान चलाना है। इसीलिए आंकड़े निकलवाने आ गया था। गुरु समझ गए। बोले- अच्छ अब तुम लोगों ने भी ये शुरू कर दिया। मेरा सुझाव है कि अभियान, प्लानिंग, मीटिंग वाले प्रोजेक्ट से जितना बचे रहोगे, उतना बेहतर लिख-पढ़ सकोगे। बातचीत आगे बढ़ानी थी, लिहाजा पूछ लिया, ऐसा क्यों गुरु? गुरु फिर शुरू हो गए। बोले, यार देखो, इस प्रदेश का मिजाज थोड़ा अलग है। यहाँ सब कुछ बड़ी मस्ती में चलता है।

अगर इसे नियमों में बांधने की कोशिश करोगे तो फिर सब बिखर जाएगा। बात कुछ अघूरी सी लगी, पुरी करने के लिए गुरु को फिर छेड़ दिया। समझा नहीं गुरु? गुरु बोले, अच्छ अब तुम्हें एक कहानी सुनाते हैं। कुछ समय पहले की बात है, कोडरमगर में एक आदित्य देव नाम के राजा हुआ करते थे। आदित्य देव ने नगर की सत्ता संभालते ही व्यवस्था बदलाव का प्रण ले लिया। अपने राज दरबारियों के साथ मिलकर तरह-तरह के प्रोजेक्ट शुरू किए। प्रारंभिक चरण में इसके सकारात्मक परिणाम भी आने लगे। कुछ दिनों में यह बात चारों तरफ फैल गई। आदित्य देव को लगा कि जनहित में किए गए कार्य के लिए जनता जय-जयकार करेगी। हुआ ठीक इसके विपरीत। प्रोजेक्ट में उलझने के कारण आदित्य देव की राजनीतिक पकड़ कमजोर हो गई। दांव-पेंच में फँसने के कारण सत्ता हाथ से चली गई। आदित्य देव ने दोबारा जतन किया। दूसरी बार नगर की बजाय राजधानी के एक किले में अपना ठिकाना बनाया।

आदित्य देव को लगा कि जो काम वह कोडरमगर में नहीं कर पाए, राजधानी में बैठकर पूरी रियायत के लिए कर देंगे। उन्होंने फिर एक प्रोजेक्ट हाथ में ले लिया। कुछ लोगों को यह बात बिल्कुल रास नहीं आई। कामकाज के दौरान की गई एक बयानबाजी आदित्य देव के गले की हड्डी बन गई और इस तरह दूसरी बार भी प्रोजेक्ट पूरा नहीं हो सका। तीसरी बार फिर राजधानी में एक और मौका मिला, लेकिन परिणाम वही ढाक के तीन पात। सो कहानी का लब्बोलुआब यह है कि वनावल में प्रोजेक्ट नहीं प्रोसेस चलता है। जब तक हाथ में लगाम है, चलाते रहिए, जब लगाम छूटे तो सब कुछ छोड़कर आगे बढ़िए। अगर प्रोजेक्ट के चक्कर में पड़े रहें तो करियर के प्रोजेक्ट पर ग्रहण लग सकता है। गुरु की कहानी और चाय की प्याली एक साथ खत्म हो गई थी। दिमाग में बस एक ही शब्द बार-बार उमड़-धुमड़ रहा था 'प्रोजेक्ट'। गुरु बौर और स्पेसिफर दिए अपने रास्ते पर निकल लिए थे।

दिल्ली के शक्ति विहार में ढही चार मंजिला इमारत 22 में से 11 लोगों की मौत



PHOTON NEWS NEW DELHI :

शनिवार को तड़के 2:39 बजे उत्तर-पूर्वी दिल्ली में मुस्तफाबाद के दयालपुर क्षेत्र में शक्ति विहार, गली नंबर 1 में एक चार मंजिला इमारत अचानक भरभरा कर गिर गई। हादसे के समय इमारत में 22 लोग फंसे थे, जिनमें से 11 की मौत हो गई। मृतकों में कई एक ही परिवार के थे। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल, दिल्ली अग्निशमन सेवा और पुलिस की मेहनत से बचाव कार्य पूरा हो गया और सभी 22 लोगों को मलबे से निकाल लिया गया। 11 जीवित लोगों को जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जिनमें से कुछ को छुट्टी मिल चुकी है। घटना की सूचना दयालपुर थाने को 3:02 बजे मिली, जिसके बाद पुलिस, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल, दिल्ली अग्निशमन सेवा और आपातकालीन एम्बुलेंस टीमों मौके पर पहुँचीं। दिल्ली अग्निशमन सेवा के निदेशक सुरक्षा दल के लोग भी टीम अतुल गर्ग ने बताया कि 2:50

- बचाव कार्य पूरा, सभी 11 जीवित लोगों को निकाला गया सुरक्षित
- जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराए गए घायल कुछ को मिली छुट्टी

बजे सूचना मिलने पर 10 दमकल गाड़ियाँ तैनात की गईं। इमारत का क्षेत्रफल लगभग 60 वर्ग गज था और तंग गलियों के कारण भारी मशीनों का उपयोग नहीं कर पाए। रेस्क्यू के दौरान 2:00 बजे, चांद (25), रेहाना (38) और तनु (15) को बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुँचाया गया। बचाव कार्य में स्थानीय लोग और नागरिक सुरक्षा दल के लोग भी टीम शामिल हुए।

उपलब्धि मिलेगा प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार 2024, डीसी रवि शंकर शुक्ला को कल सम्मानित करेंगे पीएम मोदी

आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम में गम्हरिया ब्लॉक देश भर में अव्वल

PHOTON NEWS SARAIKELA :

झारखंड के सरायकेला खरसावा जिले के गम्हरिया प्रखंड का वयन प्राइम मिनिस्टर अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस इन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन - 2024 के लिए हुआ है। यह प्रखंड आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम में देश भर में अव्वल आया है। यह पुरस्कार 21 अप्रैल को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में दिया जाएगा। गम्हरिया प्रखंड की तरफ से यह पुरस्कार सरायकेला खरसावा जिले के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला प्राप्त करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने हाथों से यह पुरस्कार प्रदान करेंगे। 21 अप्रैल को सिविल सेवा दिवस के अवसर पर यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार लेने सरायकेला खरसावा के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला नई दिल्ली रवाना हो गए हैं। गम्हरिया प्रखंड को यह पुरस्कार मिलने से सरायकेला खरसावा जिले के साथ-साथ पूरे राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई है।

नीति आयोग की टीम ने की थी योजना की जमीनी हकीकत की पड़ताल

सात जनवरी 2023 को शुरू किया गया था आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम



उपायुक्त रविशंकर शुक्ला

कार्यक्रम को धरातल पर उतारने के लिए की गई कड़ी मेहनत



झारखंड से चयनित एकमात्र प्रखंड

कार्यक्रम के अंतर्गत झारखंड से केवल गम्हरिया प्रखंड का चयन हुआ है। हाल ही में नीति आयोग की दो सदस्य टीम ने जिले में पहुंचकर योजना की जमीनी हकीकत की पड़ताल की थी। इसके बाद इन योजनाओं की वीडियोग्राफी भी कराई गई। कैबिनेट सेक्रेटरी की तरफ इस पूरे कार्यक्रम की मॉनिटरिंग की जा रही थी।

उपायुक्त रविशंकर शुक्ला की तरफ से इस कार्यक्रम को धरातल पर उतारने में कड़ी मेहनत की गई है। सरायकेला खरसावा जिला प्रशासन ने गम्हरिया प्रखंड के सभी अधिकारियों की इस उपलब्धि पर प्रशंसा की है और आगे भी विकास योजनाओं को इसी तरह धरातल पर उतारने की बात कही है, ताकि इसका लाभ जनता को मिलता रहे। यह कार्यक्रम नीति आयोग की पहल है, जिसे 7 जनवरी 2023 को शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य देश के 500 पिछड़े प्रखंडों में जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। इसके अंतर्गत पांच मुख्य फोकस क्षेत्रों- स्वास्थ्य और पोषण, शिक्षा, कृषि एवं संबद्ध सेवाएं, बुनियादी ढांचा, तेज गति से सामाजिक-आर्थिक विकास, सुशासन और सेवा वितरण में सुधार लाया जाता है। कार्यक्रम के तहत गम्हरिया प्रखंड में अच्छा काम हुआ है। इस प्रखंड का इस कार्यक्रम के तहत तेजी से विकास हुआ और इसी वजह से इसे देश में अव्वल स्थान मिला है।



दिल्ली से सतपुड़ा-कान्हा का सफर

जब जीवन की दिनचर्या बोझिल हो जाए, समय की रफतार थका दे और शहर की भीड़ आत्मा को निगलने लगे तो कहीं दूर, बहुत दूर निकल जाना चाहिए। ऐसा ही एक क्षण आया मेरे जीवन में, जब लगा कि अब और नहीं। मन भीतर से कहने लगा कि कुछ दिन जंगल में बिताने चाहिए, वहाँ जहाँ न शोर हो, न दौड़, बस शुद्ध हवा, हरियाली और जीवन की असली धड़कन और यूँ शुरू हुई मेरी यात्रा। दिल्ली से मध्यप्रदेश के दो अद्भुत रत्न सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और कान्हा राष्ट्रीय उद्यान की ओर।

मेरी यात्रा की शुरूआत दिल्ली से हुई, जहाँ से मैंने नर्मदापुरम के लिए ट्रेन ली। करीब 13 घंटे का यह सफर था, लेकिन जैसे-जैसे ट्रेन मध्यप्रदेश की ओर बढ़ी, खिड़की के बाहर का दृश्य बदलने लगा। खेतों की हरियाली, लाल मिट्टी और छोटे-छोटे गाँवों की झलक ने इस सफर को धीरे-धीरे एक अलग रंग देना शुरू कर दिया। नर्मदापुरम पहुँचने के बाद मैंने टैक्सी बुक की और पचमढ़ी की ओर निकल पड़ा। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के कुछ एंट्री प्वाइंट्स पचमढ़ी के आसपास ही पड़ते हैं जैसे - मधई, चूरना और पनारिया।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व को अक्सर भारत के कम एक्सप्लोर किए गए जंगलों में गिना जाता है। लेकिन जो लोग यहाँ आए हैं, वे जानते हैं कि यह जगह जितनी रहस्यमयी है, उतनी ही जीवंत और आत्मीय भी। मैंने अपनी जंगल सफारी के लिए मधई गेट चुना। सबसे अलग बात यह थी कि जंगल में प्रवेश करने के लिए पहले एक छोटी-सी नाव से नर्मदा नदी पार करनी पड़ती है। वह क्षण जब नाव नदी पर तैरती है और सामने विशाल हरियाली फैलती जाती है, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

मेरी पहली सफारी बेहद खास रही। सुबह की ठंडी हवा, नीरवता से भरे जंगल, पक्षियों की हल्की आवाजें और अचानक सामने से निकलती चीतलों की टोली। सबकुछ एक पेंटिंग जैसा लग रहा था। हमने सांभर, नीलगाय, जंगली सूअर और दुर्लभ मालाबार जायंट स्किवरल भी देखी। हालांकि बाघ

युगवकड़ की पाती



संजय शेफर्ड नई दिल्ली



Email- thephotonnewsjharkhand@gmail.com

1. हमें अपना फीडबैक, सुझाव या टिप्पणियां देने के लिए दिए गए बार कोड को स्कैन करें या मेल करें।
2. आप हमें अपनी रचनाएं, कविता या आलेख भी भेज सकते हैं। जिसे हम अपने आने वाले अंक पर प्रकाशित करेंगे।

नहीं दिखा, पर जंगल में बाघ की उपस्थिति हर ओर महसूस होती थी। पेड़ों पर पंजों के निशान, ट्रैक्स और गाइड की कहानियां उसे आसपास ही मौजूद होने का अहसास कराती रहीं। सतपुड़ा के जंगल में मेरा ठहराव

एक लकड़ी के ट्री हाउस में था। यह अनुभव एकदम अनूठा था। चारों ओर जंगल, नीचे गहराई, और सिर पर तारे। रात के सन्नाटे में केवल झींगुरों की आवाज, कभी-कभी उल्लू की बोली और पेड़ों की सरसराहट। कोई

भा गई महुआ की चाय

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के मुख्य एंट्री पॉइंट मधई गेट के पास कई ठहरने की बेहतरीन जगहें मौजूद हैं। हम मध्यप्रदेश टूरिज्म के जंगल कैम्प में रुके। इस जगह पर दर्जन भर रिजॉर्ट्स हैं, जहां पर आप ठहर सकते हैं। ये सभी जगहें जंगल के करीब हैं और शानदार नेचर व्यू देती हैं। खानपान में यहाँ लोकल व्यंजन के साथ-साथ सादा शाकाहारी और गैर-शाकाहारी भोजन,

दोनों मिलते हैं। रिजॉर्ट्स आमतौर पर थाली सिस्टम में खाना परोसते हैं जिसमें दाल, सब्जी, चावल, रोटी और सलाद शामिल होते हैं। कुछ जगहों पर महुआ से बनी विशेष चाय या लोकल ड्रिंक्स भी मिलती हैं। यदि आप बजट ट्रेव्लर हैं तो मधई के पास लोकल गेस्टहाउस या होमस्टे भी उपलब्ध हैं, जहाँ घरेलू भोजन और आत्मीयता का अनुभव मिलेगा।

इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस नहीं, कोई कॉल नहीं, सिर्फ मैं और प्रकृति। उस रात पहली बार मुझे नींद से ज़्यादा सपनों में भरोसा हुआ। लगा, जैसे मैं जंगल के किसी पुराने वृक्ष की आत्मा से बात कर रहा हूँ।

सतपुड़ा से कान्हा मेरी यात्रा का दूसरा चरण था। सतपुड़ा से कान्हा तक की दूरी करीब 400 किलोमीटर है। यह सफर मैंने टैक्सी और लोकल बसों के संयोजन से तय किया। रास्ते में मैं मंडला, नरसिंहपुर जैसे छोटे शहरों से गुजरता, जिनमें अब भी जीवन की

सादगी सांस लेती है। मिट्टी के घर, नीम के पेड़ के नीचे बैठे बुजुर्ग और खेतों में लहराती फसलें, सब कुछ किसी पुराने पोस्टकार्ड जैसा लगा।

कान्हा पहुँचते ही मुझे पहली अनुभूति हुई। यह सिर्फ जंगल नहीं है, यह एक जीवंत कविता है। घने साल वृक्षों के बीच से जाती कच्ची सड़कों पर जीप सफारी एक रोमांचक शुरूआत थी। मैंने सुबह-सुबह सुखी रेंज में सफारी बुक कराई थी। रात की ओस से भोगे मैदान, धुंध में लिपटी हरियाली और चहचहाते पक्षियों के बीच सफारी

का आरंभ हुआ। लगभग डेढ़ घंटे बाद, हमारा गाइड अचानक उत्साहित हो गया, बाघिन का मूवमेंट है! फिर एक मोड़ पर, हमने देखा घास के बीच से धीरे-धीरे चलती हुई एक बाघिन। उसकी आँखों में शांति और चाल में अधिकार था। वह बगैर हमारी ओर देखे जंगल में विलीन हो गई, लेकिन उसका प्रभाव हमारे भीतर स्थायी छाप छोड़ गया।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में ठहरने के लिए विभिन्न विकल्प उपलब्ध हैं जो आपकी सुविधा और बजट के अनुसार चुने जा सकते हैं। लक्जरी अनुभव के लिए बंजारा टोला और सिगिनावा जंगल लॉज जैसे रिसॉर्ट्स उपयुक्त हैं, जो उच्च गुणवत्ता की सेवाएं और सुविधाएं प्रदान करते हैं। मध्यम बजट के यात्रियों के लिए तुली टाइगर रिजॉर्ट और कृष्णा जंगल रिजॉर्ट जैसे विकल्प उपलब्ध हैं, जो आरामदायक आवास और आवश्यक सुविधाएं प्रदान करते हैं।? खानपान के लिए, अधिकांश रिजॉर्ट्स में बहु-व्यंजन रेस्टोरेंट होते हैं,

बैगा जनजाति का देखा नृत्य

कान्हा के आसपास बैगा जनजाति के गाँव हैं। मैंने एक रात एक लोकल होमस्टे में बिताई, जहाँ मिट्टी की दीवारें थीं और रोटी लकड़ी की आँव पर बनी। घर के बुजुर्गों ने मुझे बैगा नृत्य दिखाया, बच्चों ने लोकगीत सुनाए और रसोई में बनी महुआ की चाय ने आत्मा को गुनगुना कर दिया। उनका जीवन अत्यंत साधारण था, लेकिन संतोष से भरा। उनके लिए जंगल सिर्फ आजीविका नहीं, बल्कि माँ है जिसे वे पूरी श्रद्धा और समझदारी से जीते हैं।

जहाँ स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय व्यंजन परोसे जाते हैं। कान्हा अर्थ लॉज में स्थानीय स्वाद और वैश्विक व्यंजनों का संयोजन मिलता है, जो ताजे और स्थानीय स्रोतों से प्राप्त सामग्री से तैयार किए जाते हैं।? बजट यात्रियों के लिए कान्हा विलेज इको रिजॉर्ट और संजय टाइगर रिजॉर्ट जैसे विकल्प हैं जो किफायती दरों पर आवास और भोजन प्रदान करते हैं।?

जब मैं जबलपुर के रास्ते दिल्ली वापसी के लिए निकला तो मेरा बैग तो वही था, लेकिन मैं नहीं। जंगल की खामोशी ने मेरे भीतर के शोर को शांत कर दिया था। अब हर चीज को देखने की दृष्टि थोड़ी और धीमी, थोड़ी और सजग हो चुकी थी। दिल्ली वापस आकर मैंने अपनी बालकनी में तुलसी का पौधा लगाया और हर सुबह उसे पानी देते हुए मुझे सतपुड़ा की सुबहें याद आने लगीं।

दिल्ली से सतपुड़ा और कान्हा की यह यात्रा सिर्फ एक स्थल-दर्शन नहीं थी। यह एक आंतरिक यात्रा थी। खुद से जुड़ने की, मौन से संवाद की और प्रकृति की गोद में आत्मा को विश्राम देने की। अगर आप भी इस भागते समय में थोड़ी सी स्थिरता ढूँढ रहे हैं तो कुछ दिन जंगल में बिताइए। वहाँ न नेटवर्क मिलेगा, न फैंसी कैफे पर वहाँ खुद से मिलने का सच्चा अवसर मिलेगा। जिसे आप कभी नहीं खोना चाहेंगे।

व्यंग्य ■ बर्बरीक

बड़े-बुजुर्ग फरमाते रहे हैं कि कलजुग में सार (साला) , बार (बाल) और ससुरार (ससुराल) काफी महत्वपूर्ण हुआ करेगा। जिस बहनोई को देखकर साला नामक प्राणी की घिघ्ची बंध जाया करती थी, वह प्राणी न जाने कब चुपके से ब्रदर- इन-लॉ हो गया। इसका तो पता ही नहीं चला। बालों का विकल्प विग हो गया। अब तो जिस रंग के सूट पहने जाते हैं, उसी रंग की विग भी लगाई जाती है। पर बालों की दुनिया में एक पक्ष यह भी है कि जिस तेजी से पुरुष गंजे हो रहे हैं और स्त्रियों के बालों की चोटी पतली और छोटी होती जा रही है, उसमें केश विन्यास और केश का न होना कोई खास समस्या नहीं रह गई है।

कलजुग की तीसरी नियामत ससुराल मानी गई थी। स्त्री-पुरुष के लिए ससुराल के अलग-अलग मायने हैं। जहाँ स्त्रियों के लिए ससुराल का मतलब जिम्मेदारी एवं कर्तव्य हुआ करता था, वहीं पुरुषों के लिए ससुराल जाना मतलब आनंद की यात्रा पर जाना होता था।

विवाह के बाद एक युवक अपने ससुराल के गांव गया। वहाँ उसका बहुत ही जोरदार स्वागत हुआ। खेतों-किसानों की एकरसा जिंदगी बरसों से बिता रहे उस युवक को सपने में भी मुमान नहीं था कि ससुराल जाने पर जिंदगी इतनी सुखद एवं स्वादिष्ट भी हो सकती है। उसने इतने सुख देखे कि अपने मन के उद्गार कहने को व्याकुल हो उठा।

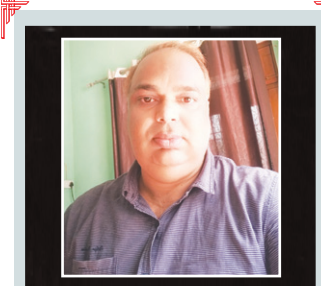
जब कहीं उसे अपनी बात को कहने का सही विकल्प नहीं मिला, तो उसने खुशी एवं उत्साह में ससुराल वाले घर के दरवाजे पर रात को चुपके से लिख दिया-

'ससुराल है सुख का द्वार'।

अगले दिन सुबह जब वह उठा तो देखा कि उसकी लिखी हुई इबारत के नीचे लिखा हुआ था-

'जब रहे दिन दो-चार'।

युवक ने ससुराल को स्वर्ग का द्वार समझ लिया था, मगर उसे जो तंज भरी बात कही गई, उससे उसका मन थोड़ा खराब हो गया। परंतु वह ससुराल के सुखों को छोड़कर तुरंत अपनी मेहनतकश जिंदगी में लौटना नहीं चाहता था। 'ये दिल मांगे मोर' की सोच वाला वह युवक सुख और आत्मसम्मान के



दिलीप कुमार

संघर्ष में दिन भर ससुराल में अपने धर्मसंकट से जुझता रहा। अंत में उसने तय किया उसके पशोपेश का उत्तर वहीं से मांगा जाए, जहां से उसकी पहली बात का उत्तर आया था।

रात को उसने चुपके से उसी स्थान पर लिखा-

'जो रहे मास-मसवारा'।

अगली सुबह जब युवक उठा उसने देखा कि उसकी इबारत के नीचे जवाब लिखा हुआ था-

'तो पकड़े तसला-थारा'।

युवक को उसका उत्तर मिल गया था। उसने सोचा कि जब तसला-थारा और कुदाल ही पकड़ना है तो ससुराल में क्यों पकड़ा जाए? बल्कि, अपने घर ही जाकर मेहनत वाले काम किए जाएं। उसे यह भी समझ में आ गया कि पुरुषों के लिए ससुराल के सुख बस चार दिनों तक सीमित हैं। चार दिन से अधिक ससुराल में रहने वाला पुरुष विशेष मेहमान नहीं, बल्कि सामान्य परिवार के सदस्य की तरह हो जाता है। उसकी कोई विशिष्टता नहीं रह जाती है।

जीजा की इबारत के नीचे उनके प्रश्नों के उत्तर लिखने वाली साली इस प्रकरण से बखूबी वाकिफ थीं। जीजा के चार दिनों के स्वागत सम्मान को देखकर उनके मन में कई विचार दिन-रात, उथल-पुथल कर रहे थे। स्वागत की विशिष्टता देखकर अभिभूत हुई लेडी समानता की पैरोकार और इंकलाब की हिमायती हुआ करती थी। उसी युवक की



साली ने सोचा कि काश ऐसा हो कि पुरुष को जो चार दिन का विशिष्ट सुख ससुराल में मिला है, वैसा ही सुख अगर उसकी ससुराल में मिले तो?

तो ऐसी ख्वाबों वाली ससुराल होने के लिए ऐसे अंतरंगी पति भी तो मिलने चाहिए। तो ऐसे पति की तलाश में एक क्रांति की पक्षधर टाइप महिला ने सोचना शुरू किया। भारत में दहेज से लेकर विवाह से जुड़ी हर्ष फायरिंग तक अपराध है, तो पति कैसे खरीदे जा सकते हैं। यहां पर 'दुल्हा बिकता है' जैसी फिल्में तो बनती हैं, पर वास्तव में दुल्हे की खरीद गैरकानूनी है।

मगर दुनिया के बाजार में सब कुछ बिकता है। जिस चीज की एक देश में पाबंदी होती है, वही चीज दूसरे देश में आसानी से मिल जाती है। तो इस निराली दुनिया के एक अलबेले शहर में किसी दुकान पर यह इश्तहार चमक रहा था 'यहां पति खरीद सकती हैं'।

पतियों वाली दुकान तो मिल गई,

मगर वहां पर 'वापसी नहीं होगी' और 'शर्तें लागू' की शर्त भी लगी थी।

काफी दिनों से ऐसी किसी अजूबे की तलाश कर रही वह महिला उस दुकान पर पहुंच ही गई। उसने इश्तहारों को बगौर पढ़ा और मुआयना करने के लिए स्टोर में घुस गई, जिसके तलों की बानगी कुछ यूं थी।

पहला तल-

'इस मंजिल के पति बारोजगार और नेकबख्त हैं'।

महिला कंधे उचकाकर आगे बढ़ती हुई बोली 'इसमें क्या खास बात है'?

दूसरा तल-

इस मंजिल के पति बारोजगार, मुदुभाषी और बच्चों के प्रेमी हैं।

महिला ने तुनककर कहा 'इनको झेलो और इनके बच्चों को भी' यह कहकर आगे बढ़ गई।

तीसरा तल-

'इस मंजिल के पति अच्छे रोजगार वाले हैं। नेक तो हैं ही और खूबसूरत भी

है'। महिला बुदबुदाई कि ह्याआजकल पैसा हो तो सब पुरुष खूबसूरत हो ही जाते हैं। इसमें 'सी क्या बड़ी बात हो गई'?

चौथा तल-

इस मंजिल के पति अच्छी कमाई वाले हैं। सरल स्वभाव के हैं, खूबसूरत भी हैं। यह घर के कामों में मदद भी करते हैं।

महिला को पुरुषों की यह कटेगरी पसंद आई। उसने सोचा यही सही रहेगा। उसने सोचा कि कुछ और भी विकल्प हों, तो उन्हें भी देख लेने में क्या हर्ज है।

पांचवां तल-

इस तल के पति में वो सारी खूबियां हैं, जो पहले चार तलों के पतियों में मिलती हैं। इसके अलावा इस तल के पति न सिर्फ अपनी बीवियों से प्यार करते हैं, बल्कि जीवन भर उनके प्रति वफादार भी रहते हैं।

महिला यह पढ़कर खुश हो गई। वह कुछ देर तक खड़ी सोचती रही, फिर उसने आगे की सीढ़ियां तलाशनी चाहीं तो उसे एक बोर्ड लिखा हुआ मिला - 'आगे और कोई तल आबाद नहीं है।

आप इससे आगे का तल तलाशने वाली न तो पहली औरत हैं और न ही अंतिम। जो भी महिला इस स्टोर में घुसती है, वह ये दिल मांगे मोर की तर्ज पर इस अंतिम मंजिल तक आ ही जाती है। इससे ज्यादा गुणों वाला पति सिर्फ मन का वहम होता है। कृपया दाईं ओर की सीढ़ियों का प्रयोग करके स्टोर से बाहर चली जाएं, क्योंकि वापसी की मनाही है'।

महिला इस व्यवहार से तिलमिला गई। उसने दीवार पर लिखी इबारत पर खींच कर सैंडिल मारी और जोर से चीखी।

किसी ने किवाड़ पर दस्तक दी तो उसकी आंख खुली। बाहर से आवाज आई 'क्या हुआ दीदी, कोई बुरा सपना देखा क्या'?

महिला अंधेरे में आंखें फाड़ - फाड़कर देख रही थी और सोच रही थी कि यह बुरा सपना था या खुशनुमा सपना था। नेपथ्य में कहीं एक सुमधुर गीत बज रहा था 'ससुराल गेंदा फूल'।

राक्षस का वरदान



नरेश अग्रवाल जमशेदपुर

शेर का शिकार हुआ लेकिन वह मरा नहीं दीवार के शीर्ष पर टंगा देखा रहा सारी गतिविधियां

अपनी प्रजाति को नहीं अपने जैसे राजाओं के वंशजों को उसकी शान में कोई आंच नहीं आई वह अब भी राजा राजाओं के साथ रहता

जो एक बार राजा घोषित हुआ फिर कभी खत्म नहीं हुआ साम्राज्य जरा सा रक्त चखकर प्रबल लोभी बन पीता रहा बार-बार मरने पर भी भूख नहीं मिटी आंखें खुली और जीभ बाहर

फिर तुलना क्यों नहीं हो सकती इन राजाओं से

भले दोनों के राज करने का तरीका अलग शासन करने की जगह जंगल और जमीन लेकिन प्रणाली तो एक ही

दोनों जैसे एक ही तरह के वंशज एक ही राक्षस का वरदान!

BRIEF NEWS

अमित मिश्रा को कर्नाटक पुलिस ने साइबर ठगी के आरोप में किया अरेस्ट

BAHARAGORA : बहरागोड़ा थाना क्षेत्र अंतर्गत साकरा गांव के एक युवक अमित मिश्रा को कर्नाटक पुलिस ने साइबर ठगी के आरोप में शनिवार को बहरागोड़ा पुलिस की मदद से गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार करने के बाद कर्नाटक पुलिस साइबर ठग को अपने साथ कर्नाटक ले गई। इस संबंध में बेंगलुरु तिलक नगर थाना के सब इंस्पेक्टर ने बहरागोड़ा थाना को लिखित सूचना दी है कि अमित मिश्रा के विरुद्ध थाना कांड संख्या 75/25 के तहत प्राथमिकी दर्ज है। उक्त मामले में वह फरार चल रहा था, जानकारी के अनुसार कर्नाटक में दर्शन एली बेकर नामक कंपनी ने इस संबंध में थाना में शिकायत दर्ज कराई थी।

साइबर अपराधियों ने उड़ाये एक लाख 41 हजार रुपये

KODERMA : कोडरमा थाना क्षेत्र के जलवाबाद निवासी मोहम्मद मोबिन आलम को साइबर अपराधियों ने अपने झांसे में लेकर उनसे एक लाख से अधिक की ठगी कर ली। मामले को लेकर आलम ने शनिवार को कोडरमा थाना में लिखित शिकायत की है। उन्होंने बताया कि 17 अप्रैल को साइबर अपराधी ने लगातार उन्हें बैंक कर्मी बनकर लोन देने की पेशकश की। उन्होंने बताया कि उनका पहले से एक निजी बैंक में लोन चल रहा है। साइबर अपराधी ने इसकी जानकारी देते हुए बताया गया कि आपका लोन का जो साप्ताहिक किस्त था। उसे बंद कर मासिक किस्त वाला लोन चालू कर दिया जाएगा।

मनोहरपुर पुलिस ने बरामद की चोरी की तीन मोटरसाइकिलें
MANOHARPUR : पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी की घटना का खुलासा कर दिया है। पुलिस ने शनिवार को चार दोपहिया वाहनों में से एक स्कूटी और दो बाइक को मनोहरपुर पंचायत भवन परिसर के बाहर से बरामद किया है। तीनों दोपहिया वाहनों को पुलिस अपने कब्जे में लेकर मनोहरपुर थाना ले गई। हालांकि अभी तक पुलिस किसी की गिरफ्तारी नहीं कर पाई है, ना ही चोर का पता लगा पाई है। बता दें कि मनोहरपुर स्टेशन परिसर से पिछले पंद्रह दिनों के भीतर चार दो पहिया वाहन चोरी हुए थे।

कृष्णा हत्याकांड में नाना-नाती गिरफ्तार

PALAMU : पलामू जिले के छहरपुर थाना क्षेत्र के रूद गांव में कृष्णा भुइयां उर्फ कड़ला हत्याकांड का पुलिस ने खुलासा करते हुए मुख्य आरोपित दिलीप भुइयां (19वर्ष) पिता अशोक भुइयां बारा एवं उसके नाना नन्देव भुइयां (65वर्ष) रूद निवासी को गिरफ्तार कर लिया है। शनिवार को दोनों को जेल भेज दिया गया। जिले की एसपी राभा रमेशन ने शनिवार को बताया कि छापेमारी टीम में कार्रवाई करते हुए हत्या में शामिल दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है।

अपराधियों की तलाश में जुटी पुलिस, साथी खोलेगा हत्या का राज

उलीडीह में कारपेंटर की गोली मारकर हत्या, खेत में मिली लाश

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :

उलीडीह थाना क्षेत्र के खड़िया बस्ती के रहने वाले 27 वर्षीय युवक ननकू लाल की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। ननकू लाल का शव शनिवार की सुबह खड़िया बस्ती के खेत में मिला है। इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है। परिजनों को घटना की जानकारी सुबह हुई। उसके बाद ननकू लाल के भाई राकेश मौके पर पहुंचे और अपने भाई की खून से लथपथ लाश देखकर उनके पैरों तले जमीन खिसक गई है। घटना के बाद से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। घटना की जानकारी पुलिस को दे दी गई है। पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गई है। मृतक के भाई राकेश ने बताया कि उसका भाई शुक्रवार की शाम 6:00 बजे घर से निकला था। इसके बाद वापस नहीं आया। राकेश का कहना है कि वह



मृतक की फाइन फोटो

रात को दो बार परिजनों ने मिलाया था फोन, ननकू ने नहीं किया था रिसीव

JAMSHEDPUR : उलीडीह थाना क्षेत्र के खड़िया बस्ती में शनिवार को हुए ननकू हत्याकांड का खुलासा करने में पुलिस जुट गई है। परिजनों ने बताया कि शुक्रवार की शाम 6:00 बजे जब घर से ननकू निकला था तो उसके साथ इसका एक जिगरी साथी भी मौजूद था। यह साथी उसके साथ काम भी करता है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि अगर इससे पूछताछ की जाए तो वह बता सकता है की हत्या के गहरे राज क्या हैं। परिजनों का कहना है कि ननकू घर से निकलने के बाद कहा गया, किससे मिला इस बारे में उसका साथी सही जानकारी दे सकता है। घटना के बाद से उसका साथी कहा है किसी को नहीं पता।

ननकू के परिवार के लोग उसके घर गए थे तो मालूम हुआ कि वह घर पर नहीं है। गौरतलब है कि शनिवार की सुबह उलीडीह के खड़िया बस्ती के रहने वाले कारपेंटर ननकू का शव उसके घर के पीछे खेत में पड़ा मिला था। उसे गोली मारी गई है। एक गोली सर पर लगी है, जिसकी वजह से ननकू लाल की मौत हुई। ननकू के पास पर्स में रुपए भी थे। यह रुपए गायब हैं। उसका मोबाइल फोन भी नहीं मिला था। पुलिस ने घटनास्थल से मोबाइल के पीछे का कवर बरामद किया था। लेकिन बाद में मोहल्ले के कुछ लड़कों को उसका मोबाइल मिल गया है।

काम से रात 8:00 बजे लौटा और फिर मोहल्ले की ही एक शादी पार्टी में चला गया। उसने सोचा कि उसका भाई भी पार्टी में ही होगा। बाद में सुबह उसकी हत्या की खबर मिली। ननकू लाल तीन भाइयों में



घटनास्थल पर बिलख रही ननकू की मां

● फोटोन न्यूज

ननकू के मोबाइल का कॉल डिटेल निकालने में जुटी पुलिस

ननकू के पिता गुनू लाल ने बताया कि ननकू काम से लौटने के बाद शाम लगभग 6:00 बजे घर से निकला था। मोहल्ले में ही शादी की पार्टी थी। परिवार के अन्य लोग शादी पार्टी में गए थे। रात 8:30 बजे जब परिवार के लोग शादी पार्टी से लौटे तो उन्होंने ननकू को फोन किया। लेकिन, उसने फोन नहीं उठाया। इसके बाद रात 12:30 के करीब दोबारा फोन लगाया गया। तब भी ननकू लाल ने फोन नहीं उठाया। परिजनों को लगा कि शायद ननकू शादी पार्टी में ही है। इसीलिए फोन नहीं उठा रहा है। लेकिन सुबह जब उसकी हत्या की सूचना मिली तो पूरा परिवार गहरे सदमे में चला गया।

लाल ने इस मामले में उलीडीह थाना पुलिस से शिकायत की थी। राकेश का आरोप है कि तब पुलिस ने उसकी नहीं सुनी थी। एक बार विवाद हुआ था तो पुलिस ने दबाव डालकर समझौता कर दिया था।

लेकिन, जब आरोपियों ने पथराव किया था। तब पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। इसी से इनका मन बड़ गया था। राकेश कुमार आशंका है कि इन्हीं युवकों ने उसके भाई की हत्या की है।

यात्रियों ने चलती ट्रेन से कूदकर बचाई जान, कई घायल

टाटानगर-खड़गपुर मेमू ट्रेन में लगी आग

PHOTON NEWS GHATSHILA :

पूर्वी सिंहभूम (जमशेदपुर) जिले के घाटशिला स्टेशन के पास शनिवार की सुबह एक बड़ा रेल हादसा टल गया, जब टाटानगर-खड़गपुर मेमू ट्रेन (संख्या 58021/58022) में अचानक आग लग गई। जानकारी के अनुसार, यह हादसा ट्रेन के ब्रेक फेल हो जाने के कारण हुआ। जैसे ही ट्रेन घाटशिला स्टेशन के निकट पहुंची, तकनीकी खराबी के कारण ब्रेक सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया। इससे ट्रेन बिना नियंत्रण के तेज रफ्तार में आगे बढ़ती रही।

कैसे लगी ट्रेन में आग : ब्रेक फेल होने के कारण ट्रेन के चक्कों और पटरियों के बीच जबरदस्त घर्षण हुआ, जिससे चिंगारियां उठने लगीं। देखते ही



देखते थे चिंगारियां आग में बदल गईं। डिब्बों से निकलता धुआं और आग की लपटें देखकर यात्रियों में भय का माहौल बन गया।

चालक व सहायक कर्मचारियों की सूझबूझ से टली बड़ी दुर्घटना : स्थिति बेहद नाजुक थी, लेकिन ट्रेन के चालक और

सबसे छोटा था। राकेश ने बताया कि मोहल्ले के ही युवक लल्ला, लापत और सिरी से उसका विवाद चल रहा था। इन लोगों ने उसके साथ मारपीट की थी। इसके बाद 6 महीने पहले घर पर पथराव भी किया था। ननकू

मदद के लिए गुहार लगाते रहे यात्री

ट्रेन रुक नहीं रही थी, ऐसे में दहशतजदा यात्रियों ने चलती ट्रेन से कूदकर अपनी जान बचाई। इस दौरान कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। कुछ यात्रियों का सामान भी ट्रेन में ही छूट गया। यात्रियों ने खिड़कियों और दरवाजों से मदद के लिए गुहार लगाई, लेकिन तब तक ट्रेन पूरी रफ्तार में थी।

खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। यात्रियों का आरोप था कि ट्रेन में पहले से तकनीकी खराबी थी, फिर भी उसे चलाया गया। इस घटना के बाद रेलवे की ओर से कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है, हालांकि आग लगने के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है।

दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने पहुंचे दो छात्रों की बैतरणी नदी में डूबने से मौत

PHOTON NEWS CHAIBASA :

झारखंड - ओडिशा राज्य से सटे सीमावर्ती के इलाके चंपुआ थाना अंतर्गत बैतरणी के केसर कुंड में डूबने से दो किशोरों की मौत हो गई है। यह दोनों किशोर अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने यहां आए थे। दोनों छात्र हैं। इनमें क्यॉंझर जिले के रुगुडी थाना के गुआली निवासी मनोहर पोद्दार का पुत्र नितेश पोद्दार और बारिया थाना के कंचनडुमुरिया निवासी मनोहर महानता का 16 वार्षिक पुत्र प्रीतम महानता शामिल हैं। नितेश स्थानीय केरल इंग्लिश मीडियम स्कूल में कक्षा 10 का छात्र है, जबकि प्रीतम ने इस वर्ष बड़बिल कलिंगा हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की है। नितेश स्थानीय इलाके के



एक मेस में पढ़ाई कर रहा था, जबकि प्रीतम दो दिन पहले महेश्वरपुर में अपने चाचा के घर घूमने आया था। चूंकि आज छुट्टी थी, इसलिए आठ दोस्तों ने दोपहर में केशरीकुंड में स्नान करने की योजना बनाई। प्रीतम को उसके चचेरे भाई ने नहाने के लिए आमंत्रित किया। शनिवार दोपहर नहाते समय उनके तीन दोस्त डूब गए। जिनमें एक किसी तरह बच निकला। डूबे छात्रों को स्थानीय लोगों ने नदी से बाहर निकाला और चंपुआ उप जिला अस्पताल पहुंचाया।

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :

जमशेदपुर के बिष्टुपुर थाना क्षेत्र स्थित अलकोर होटल में शुक्रवार की रात उस समय हड़कंप मच गया जब सोनारी इलाके के कुछ युवक शराब के नशे में जमकर हंगामा करने लगे। बताया जा रहा है कि युवकों ने पहले होटल के बार में शराब पी, फिर नीचे उतरते समय राहगीरों और होटल स्टाफ से बदमौजीी शुरू कर दी। होटल कर्मचारियों ने जब उन्हें शांत करने की कोशिश की तो युवक गाली-गलौज पर उतर आए और मारपीट करने लगे। देखते ही देखते पूरा होटल परिसर में अफरा-तफरी में मच गई। मारपीट बढ़ने पर कर्मचारियों ने दो युवकों को पकड़कर बंधक बना लिया और



प्रतीकात्मक फोटो

तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची बिष्टुपुर थाना पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित किया और होटल कर्मचारियों की पकड़ से दोनों युवकों को छुड़ाकर हिरासत में लिया। पुलिस का कहना है कि युवक सोनारी के रहने वाले हैं और नशे की हालत में थे। फिलहाल पुलिस दोनों युवकों से पूछाछ कर रही है। हालांकि अभी तक किसी पक्ष की ओर

से कोई लिखित शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है। बिष्टुपुर थाना प्रभारी का शनिवार को कहना है कि इस मामले में होटल के स्टाफ थाने पर आए हैं। एफआईआर दर्ज करने की प्रक्रिया चल रही है। स्टाफ की तरफ से अवेदन लिखा जा रहा है। अवेदन मिलने के बाद इस मामले में एफआईआर दर्ज की जाएगी और इसके बाद कार्रवाई होगी।

स्वचालित वाटर सप्लाई सिस्टम का टाटा स्टील यूआईएसएल ने किया उद्घाटन

बिष्टुपुर व भुइयांडीह में शुरू किया गया अत्याधुनिक जल संयंत्र

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :

टाटा स्टील यूआईएसएल ने जमशेदपुर के भुइयांडीह क्षेत्र में 5 एमएलडी (मिलियन लीटर प्रतिदिन) क्षमता वाले आधुनिक जल उपचार संयंत्र और बिष्टुपुर स्थित सेंट्रल वाटर टावर में स्वचालित जल आपूर्ति प्रणाली का उद्घाटन किया। इन सुविधाओं का उद्घाटन टाटा स्टील के कॉर्पोरेट सर्विसेज के उपाध्यक्ष चाणक्य चौधरी ने किया, उनके साथ टाटा स्टील यूआईएसएल के प्रबंध निदेशक रितु राज सिन्हा भी उपस्थित थे। इस परियोजना के पूर्ण होने के साथ ही टाटा स्टील ने अपने सेवा क्षेत्रों में लगभग 100% पेयजल उत्पादन क्षमता हासिल कर



उद्घाटन के अवसर पर टाटा स्टील कॉर्पोरेट सर्विसेज के उपाध्यक्ष चाणक्य चौधरी व अन्य

● फोटोन न्यूज

ली है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। टाटा स्टील यूआईएसएल द्वारा विकसित यह जल उपचार संयंत्र विशेष रूप से जमशेदपुर के असेविन क्षेत्रों जैसे बाबुडीह लालभट्टा, भुइयांडीह, एनएमएल कॉलोनी, ग्वाला बस्ती और आस-

पास के अन्य इलाकों को शुद्ध और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बनाया गया है। यह संयंत्र लगभग 4,500 घरों को सेवाएं देगा और इसमें प्रेशर सैंड फिल्टर और सक्रिय कार्बन फिल्टर तकनीक का उपयोग किया गया है। वहीं, बिष्टुपुर

के सेंट्रल वाटर टावर में शुरू की गई स्वचालित जल आपूर्ति प्रणाली से जल वितरण की गति, समयबद्धता और निरंतरता में उल्लेखनीय सुधार होगा। यह प्रणाली बिष्टुपुर क्षेत्र के निवासियों को लगातार और सुचारु जल

आपूर्ति सुनिश्चित करेगी, जिससे उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार आएगा। टाटा स्टील यूआईएसएल ने नागरिकों से आग्रह किया है कि वे सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार जल कनेक्शन के लिए आवेदन करें, ताकि उन्हें समय पर और उच्च गुणवत्ता वाली जल सेवा का लाभ मिल सके। कंपनी का उद्देश्य शहर के प्रत्येक घर तक पाइप के माध्यम से जल पहुंचाना है। इस अवसर पर टाटा स्टील के टाउन इंफ्रास्ट्रक्चर के प्रमुख वरुण बजाज, जल एवं अपशिष्ट जल सेवा के महाप्रबंधक संजीव झा, टाउन ओपेंड्रम के महाप्रबंधक रवींद्र कुमार सिंह एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

कांड्रा में दिनदहाड़े अपराधियों ने व्यापारी संजय बर्मन को मारी गोली

PHOTON NEWS KANDRA :

झारखंड के सरायकेला-खरसावां जिले में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब कांड्रा थाना क्षेत्र के अंतर्गत कांड्रा-डुमरा मुख्य मार्ग पर स्थित एसबी ट्रेडर्स के मालिक संजय बर्मन पर दिनदहाड़े बाइक सवार बदमाशों ने गोलीबारी कर दी। घटना के बाद अपराधी मौके से फरार हो गए। संजय बर्मन को दो गोलियां लगीं हैं। एक पैर में और दूसरी जांघ में लगी है।

स्थानीय लोगों ने पहुंचाया थाना, पुलिस ने अस्पताल में भर्ती कराया : गोली लगने के बाद स्थानीय लोग तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और घायल संजय बर्मन को कांड्रा थाना ले गए। वहां से पुलिस ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए

700 शिक्षकों का वेतन रोका कल से धरने की चेतावनी



PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :

झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ का प्रतिनिधिमंडल जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह के नेतृत्व में शनिवार को जिला शिक्षा अधीक्षक से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने जिले के 11 प्रखंडों के 700 शिक्षकों का वेतन रोके जाने पर नाराजगी जताई। शिक्षकों का कहना है कि वित्त विभाग के पत्र में वेतन रोकने का कोई निर्देश नहीं है। पत्र के अनुसार शिक्षकों का वेतन पूर्व से ही अनुमत्य है और मिलता आ रहा है। इसके बावजूद डीडीओ वेतन जारी नहीं कर रहे हैं। जिला शिक्षा अधीक्षक ने डीडीओ को वेतन भुगतान का आदेश दिया था। फिर भी डीडीओ ने वेतन लंबित रखा है। डीडीओ का कहना है कि जब तक शिक्षकों की सेवा पुस्तिका जमा नहीं होगी, वेतन नहीं मिलेगा। संघ ने सवाल उठाया कि सेवा पुस्तिका का कस्टोडियन डीडीओ होता है, तो

उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। ऐसे में सेवा पुस्तिका के नाम पर वेतन रोकना अनुचित है। मार्च माह का वेतन नहीं मिलने से शिक्षकों में भारी आक्रोश है। सभी शिक्षक वेतन पर पूरी तरह निर्भर हैं। फरवरी का वेतन आयकर, शिड्यूल और स्टेटमेंट भरने में चला जाता है। ऐसे में मार्च का वेतन मिलना जरूरी होता है। संघ ने चेतावनी दी है कि यदि सोमवार तक वेतन भुगतान नहीं हुआ तो सभी शिक्षक प्रखंड कार्यालय में धरना देंगे। इसके बाद भी वेतन नहीं निकला तो मंगलवार को उपायुक्त कार्यालय के समक्ष धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। प्रतिनिधिमंडल में जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह, जमशेदपुर अध्यक्ष राजेंद्र कुमार कर्ण, दिगु तिवु, रामाकांत शुक्ला, रुद्र कुमार शीट, कृष्ण मोहन ठाकुर, उत्तम सिंह, निर्मल कुमार और अर्चना कुमारी शामिल थे।

बंडामुंडा में रेललाइन बिछाने का विरोध कर रहे एक ग्रामीण की जेसीबी की चपेट में आकर मौत



था। लेकिन शनिवार की सुबह पुनः निर्माण कार्य आरंभ किए जाने पर करीब 11 बजे फिर ग्रामीण कार्यस्थल पर जुट गए। उन्होंने इस निर्माण कार्य को बंद करने को कहा। इसके बाद ग्रामीण और पुलिस के बीच झड़प हुई।

जेसीबी के आगे लेट गए थे विरोध कर रहे ग्रामीण :

कई ग्रामीण जेसीबी के सामने लेट गए। इसी दौरान, एक जेसीबी बरकानी गांव के 35 वर्षीय एतो एक्का के ऊपर चढ़ गई। एतो

एक्का ने मौके पर दम तोड़ दिया। एतो एक्का की मौत के बाद ग्रामीण उग्र हो गए। ग्रामीणों ने पथराव कर दिया। इस पथराव में बिसरा के सहायक तहसीलदार पुरुषोत्तम नायक, पुलिस कांस्टेबल मनोरंजन दास, राकेश महाराणा, जेसीबी चालक सैमुएल मासी समेत अन्य पांच पुलिस कर्मी घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए राउरकेला सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मुर्शिदाबाद में हिंदुओं पर हिंसा के विरोध में जमशेदपुर में जोरदार प्रदर्शन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ कानून के विरोध की आड़ में हिंदुओं पर हो रही हिंसा के खिलाफ जमशेदपुर में विश्व हिंदू परिषद, बजरां दल, भाजपा, जदयू और अन्य संगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने शनिवार को जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में भगवा झंडा लेकर ममता बनर्जी सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग उठाई।



प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि मुस्लिम भीड़ द्वारा की गई यह हिंसा सुनियोजित थी, जिसका उद्देश्य मुर्शिदाबाद को हिंदू विलीन बनाना है। वक्फ कानून के विरोध में शुरू हुई हिंसा में 200 से अधिक हिंदू घरों व दुकानों को जला दिया गया,

10 मई को लगेगी राष्ट्रीय लोक अदालत

CHAIBASA : जिला विधिक सेवा प्राधिकार पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा के अध्यक्ष सह प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश मोहम्मद शाकिर के निर्देश पर प्राधिकार के सचिव रवि चौधरी ने 10 मई को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए एक मीटिंग की। इस मीटिंग में उन्होंने राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से लंबित सुलहनीय मामलों के निष्पादन के लिए प्रेरित किया, जिससे ज्यादा लोगों को राष्ट्रीय लोक अदालत का लाभ मिल पाए। साथ ही उन्होंने प्राधिकार के द्वारा किए जा रहे हैं दैनिक कार्यों के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक परिचर्चा भी की।



जमशेदपुर स्थित टीएमएच अस्पताल पहुंचाया। घायल की हालत स्थिर बताई जा रही है, लेकिन गोली लगने के कारण वे गंभीर रूप से जखमी हैं। घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई है। कांड्रा बाजार और आसपास के व्यापारियों में गहरा रोष और चिंता देखने को मिल रही है। व्यापारियों का कहना है कि पुलिस प्रशासन को सुरक्षा व्यवस्था और गश्ती को सख्त करने की जरूरत है, क्योंकि अब अपराधी खुलेआम फायरिंग करने लगे हैं।



सोना सूख गया

चीन में हुनसेन नाम का राजा शासन करता था। वह बहुत कंजूस था। दान-पुण्य तो दूर, जनता की जरूरतें पूरी करने के लिए भी धन नहीं निकालता था। उसके पास सोने-चांदी का अपार भंडार था, लेकिन वह किसी की मदद नहीं करता था। राजा के महल से कुछ दूरी पर सिनचिन नामक एक वृद्ध की छोटी-सी झोपड़ी थी। सिनचिन उस समय चीन का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था। राजा की आदतों से वह भी परेशान था। अतः उसने राजा को सबक सिखाने की ठान ली।

एक दिन वह अपने मित्रों से सोने के नन्हें-नन्हें चार टुकड़े उधार लाया। उसने सोने के उन टुकड़ों को पीली चमकती हुई एक बड़ी छलनी में रखा और पास बहती नदी के किनारे जा बैठा। इस नदी पर राजा रोज स्नान करने आता था। सिनचिन ने दूर से ही राजा को आते हुए देखा। वह ऐसा अभिनय करने लगा, मानो छलनी में कुछ छान रहा हो। राजा ने उसके पास आकर पूछा, लसिनचिन, यह क्या कर रहे हो? तुम्हें सुबह-सुबह रेत छानने की क्या आवश्यकता पड़ गई? सिनचिन ने कहा, महाराज, मैं तो इस रेत में छिपा सोना ढूँढ़ रहा हूँ। राजा कुछ कहता, इससे पहले ही सिनचिन ने छलनी भर रेत निकाली और छान दी। छलनी के ऊपर सोने के चार छोटे-छोटे टुकड़े चमक रहे थे। राजा ने आश्चर्य से पूछा, ल्लरेत में सोना! यह कैसे किया? सिनचिन ने समझाते हुए जवाब दिया, ल्लहुजूर, आज से महीना भर पहले मैंने सोने का एक छोटा सा टुकड़ा इस जगह पर बोया था। देखिए ल्लहुजूर, पूरे चार टुकड़े निकले हैं। यदि मैं कुछ और सब्र करता, तो यहाँ बहुत से टुकड़े मिलते। राजा ने चौंकते हुए कहा, ल्लव्या बकवास करते हो? भला क्या सोने की भी खेती की जा सकती है? सिनचिन ने कहा, क्यों नहीं ल्लहुजूर? आप खुद ही देख लीजिए। मैं तो गरीब आदमी हूँ। पिछले दस वर्षों से इसी प्रकार सोना बोता हूँ और काट लेता हूँ। इसी सोने से मेरा पेट पलता है। राजा ने नाराजगी भरे स्वर में कहा, तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मेरे पास तो सोने का ढेर है। मुझे पता होता, तो मैं सारा सोना भो देता। आज तक तो मेरा महल सोने से भर गया होता। इस पर सिनचिन ने कहा, ल्लहुजूर, अब भी देर नहीं हुई है। आप अब भी बो लीजिए। छह महीने बाद देखिएगा, तो फसल लहलहाती नजर आएगी। राजा ने सिनचिन के कंधे पर हाथ रखते हुए जवाब दिया, देखो सिनचिन, तुम तो एक अनुभवी आदमी

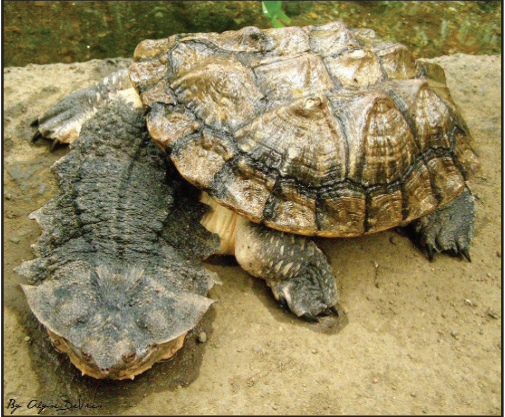
हो। मेरी ओर से तुम सोने की खेती करो। इसके लिए तुम्हें जितना सोना चाहिए, तुम ले सकते हो। आज ही मेरे साथ महल में चलो। इस काम के लिए तो तुम मेरे सेवकों को भी साथ ले सकते हो। सिनचिन तो मानो इस मौके की प्रतीक्षा में था। वह तुरंत राजी हो गया। वह महल में गया और सोने के ढेरों टुकड़े ले आया। राजा ने अपने दस सेवक भी सिनचिन को मदद के लिए दे दिए। देखते ही देखते, नदी के किनारे खुदाई का काम शुरू हो गया। सिनचिन के कहे अनुसार, सेवकों ने वहाँ पर सोना बीज की तरह बो दिया। ऊपर रेत डाल दी। सिनचिन ने राजा को आश्वासन दिया कि छह महीने बाद बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिल जाएगा। इस बीच सिनचिन रोज रात को नदी किनारे जाने लगा। वहाँ पर वह रोज थोड़ा सा हिस्सा खोदता और वहाँ दबा सोना अपने झोले में रख लाता। अगले दिन सुबह ही वह सारा सोना गरीबों में बांट देता था। धीरे-धीरे जनता की गरीबी मिटने लगी। इधर राजा इंतजार करता रहा कि कब छह महीने पूरे हों और उसे बोए हुए सोने का तीन गुना सोना मिले। धीरे-धीरे छह महीने भी पूरे हो गए। राजा ने सिनचिन को दरबार में बुलाया। उसे आदेश दिया कि वह सारा सोना खोद लाए। सिनचिन ने इस काम के लिए कुछ सेवकों की मांग की। राजा ने इस बार बीस सेवक उसके साथ कर दिए। सेवकों ने उस स्थान पर काफी गहराई तक खुदाई की, रेत को छाना। लेकिन सभी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गए कि उसमें सिवाय दो-चार सोने के टुकड़ों के कुछ नहीं था। सिनचिन भागा-भाग़ा राजा के पास पहुँचा। रोते हुए बोला, ल्लहुजूर, आपकी किस्मत खराब थी। जमीनी में सोने के दो-चार सूखे हुए टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं निकला है। राजा ने आश्चर्य से पूछा, ल्लसूखे हुए टुकड़े! तुम्हारा मतलब क्या है? सिनचिन ने जवाब दिया, हाँ ल्लहुजूर, इस बार सारा सोना सूख गया है। आप तो जानते ही हैं, इस बार बारिश बिल्कुल नहीं हुई। सारी फसल सूख गई। आपका बहुत नुकसान हो गया इस बार। हुनसेन ने डांटते हुए पूछा, भला सोना सूख कैसे सकता है? यह तो ठोस चीज है। सिनचिन ने मुसकराते हुए कहा, ल्लहुजूर, आपने इतनी बातों पर विश्वास कर लिया कि सोना बोया जा सकता है, सोने की फसल लहलहा सकती है, सोना काटा जा सकता है। फिर भला इतनी सी बात पर विश्वास क्यों नहीं करता कि सोना सूख गया? राजा निरुत्तर हो गया। मंत्रियों से सलाह ली, तो उन्होंने कहा, सिनचिन ठीक कहता है। वाकई यदि सोना बोया जा सकता है, तो सूख भी सकता है। अब तो राजा से कुछ कहते नहीं बना। वह सिर पकड़कर बैठ गया। सिनचिन ने कंजूस राजा को अच्छा सबक सिखा दिया था।



अंतरराष्ट्रीय शोध टीम ने खोजी कछुए की नई प्रजाति

एक अंतरराष्ट्रीय टीम के साथ मिलकर जर्मनी के सेनकेनबर्ग के वैज्ञानिक यूवे फ्रिट्ज ने आनुवांशिक विश्लेषण के आधार पर कछुए की एक नई प्रजाति के बारे में बताया है। अब तक माना जाता था कि ‘जीनस चेलुस’ कछुए की केवल एक ही प्रजाति है। अध्ययन में कहा गया है कि उन जानवरों की प्रजातियों के संरक्षण का पुनर्नृत्यांकन किया जाना चाहिए, जिनको अक्सर अवैध पशु व्यापार में बेच दिया जाता है। इस अध्ययन को साइंटिफिक पत्रिका मॉलिक्युलर फाइटोलेनेटिक्स एंड इवोल्यूशन में प्रकाशित किया गया है।

इस प्रजाति का नाम माता-माता बताया गया है, जो पानी के नीचे कीचड़ में छिपे रहते हैं, इनकी लंबाई 53 सेंटीमीटर तक होती है। ये शीवाल से ढकी चट्टानों की तरह दिखते हैं। लेकिन जब कोई शिकार करने लायक जानवर सामने आता है, तो कछुआ उसे अचानक अपना बड़ा मुँह खोलकर उसे चूसकर पूरा निगल जाता है। ड्रेसडेन में सेनकेनबर्ग प्राकृतिक इतिहास संग्रह के प्रोफेसर डॉ. यूवे फ्रिट्ज बताते हैं यद्यपि ये कछुए अपने विचित्र रूप और असामान्य खाने के व्यवहार के कारण व्यापक रूप से जाने जाते हैं, लेकिन उनकी विविधता और आनुवांशिकी के बारे में बहुत



कम जानकारी है। फ्रिट्ज कहते हैं अब हमने यह मान लिया कि इस कवचवाले सरीसृप की केवल एक प्रजाति है जो पूरे दक्षिण अमेरिका में व्यापक रूप से फैली हुई है। लेकिन ऐसी प्रजातियाँ, जिन्हें लुप्तप्राय नहीं माना जाता है, वे आश्चर्यजनक हो सकती हैं। आनुवंशिक विश्लेषण के आधार पर, उन्हें अक्सर दो या अधिक स्वतंत्र प्रजातियों में विभाजित किया जाता है। कई अध्ययनों से पता लगा है कि माता-माता कछुए अमेज़न बेसिन की तुलना में ओरिनोको नदी में अलग दिखते हैं। ड्रेसडेन के वैज्ञानिक कहते हैं इस अवलोकन के आधार पर, हमने इन जानवरों के जेनेटिक बनावट पर बारीकी से नजर रखने का फैसला किया है। 75 डीएनए नमूनों का उपयोग करते हुए,

शोधकर्ताओं ने बताया कि पिछली मान्यताओं के विपरीत, माता-माता कछुओं की आनुवंशिक और दिखने में भी भिन्न-भिन्न दो प्रजातियाँ हैं। नई प्रजातियाँ चेलुस ओरिनोकेन्सिस ओरिनोको और रियो नीग्रो बेसिन में निवास करती हैं, जबकि चेलुस फ़िर्मब्रिआटा के रूप में जानी जाने वाली प्रजाति विशेष रूप से अमेज़न बेसिन तक सीमित है।

अध्ययन के अनुसार, लगभग 1 करोड़ 30 लाख साल पहले दोनों प्रजातियाँ मियोसीन के दौरान विभाजित हो गई थी। इस अवधि के दौरान, पूर्व अमेज़न-ओरिनोको बेसिन में जानी पहचानी दो नदी घाटियाँ अलग-अलग हो गई थी। कई जलीय जीवों की प्रजातियाँ इस तरह स्थान के आधार पर अलग हो गईं और इन्होंने आनुवंशिक रूप से फैलना शुरू कर दिया। नई प्रजातियों के विवरण में भी माता माता के संरक्षण की स्थिति का पुनर्नृत्यांकन आवश्यक है। आज तक, इस प्रजाति के व्यापक रूप

से फैलने के कारण इन्हें लुप्तप्राय नहीं माना गया था। अध्ययनकर्ताओं ने कहा कि हमारे परिणाम बताते हैं कि, दो प्रजातियों में विभाजित होने के कारण, प्रत्येक प्रजाति की जनसंख्या आकार पहले की तुलना में छोटी हुई है। इसके अलावा, हर साल इन विचित्र दिखने वाले हजारों जानवरों का अवैध व्यापार होने से इनका जीवन समाप्त हो रहा है। हालाँकि इन जानवरों के अवैध व्यापार का पता लगाने पर अधिकारियों द्वारा इन्हें जब्त भी किया जाता है। बोगोटा के नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ कोलम्बिया के प्रोफेसर और प्रमुख अध्ययनकर्ता मारियो वर्गास-रामिरेज़ कहते हैं कि इससे पहले बहुत देर हो जाए, हमें इन आकर्षक जानवरों की रक्षा करनी चाहिए।



बस्तर में पाई जाने वाली जनजातियां

आधुनिक भारत में आज भी कई ऐसे स्थान हैं जहां पर बस्सों से चली आ रही जनजातियां निवास करती हैयु तो भारतीय इतिहास में आदिवासी जनजाति संस्कृति का बहुत महत्व है.लेकिन समय के साथ बहुत सी जनजातियों ने स्वयं में बदलाव किये है जैसे हलबा व भतरा जनजाति इत्यादि, अगर संपूर्ण विश्व की बात की जाए तो सबसे ज्यादा जनजातियां भारत में पाई जाती है जैसे कोल, भील, पहाड़िया, कमार, थारु जनजाति इत्यादि. लेकिन आज हम आपको बस्तर में पाई जाने वाली प्राचीन समय से लेकर अब तक चली आ रही जनजातियों के बारे में बताने जा रहे हैं.ये जनजातियां बस्तर व बस्तर के आस पास के इलाको में निवास करती है.तो जानते हैं इन जनजातियों के बारे में

जनजाति का अर्थ

जनजाति को समझने के लिए पहले हमें प्रकृति व जंगलों में रहने वाले मनुष्य के समुदाय को बारीकी से समझना चाहिए.जनजाति वह होती है जो सभी लोगों से दूर पर्वतों,जंगलों, वनों इत्यादि में निवास करती हैं जिन की भाषा अलग होती है जो भूत-प्रेत, देवी शक्तियों में बेहद विश्वास रखते हैं. जिन का व्यवसाय जंगली शिकार व जंगली पेड़ पोधो पर निर्भर रहता है. जंगलो में पाई जाने वाली लगभग 90 % जनजातीय असभ्य व हिंसक होती हैजिस प्रकार जंगली जानवर अपने इलाके की रक्षा के लिए अपनी जान तक दे सकता है ठीक इसी प्रकार ये जनजातीया अपने इलाके की रक्षा करती है. अमूमन सभी जनजाती माँसाहारी होती है.

बस्तर में पाई जाने वाली जनजातियों से पहले आपको बस्तर इलाके के बारे में समझना होगा.बस्तर एक जिला है जो चार संस्कृतियों से घिरा हुआ है इसके चारों तरफ छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और महाराष्ट्र की सीमाएं लगती है. इस जिले के जंगलो में हजारों सालों से विभिन्न जनजातियों निवास करती हैं जिनमे से प्रमुख जनजातियों का विवरण इस प्रकार है :

माडिया जनजाति

माडिया जनजाति बस्तर के जंगलों में पाई जाने वाली जनजाति है. यह जनजाति बस्तर के पहाड़ी इलाकों व जंगलों में निवास करती है. माडिया जनजाति को दो भागों में बांटा गया है 1. अबुझ माडिया 2. दण्डामी माडिया (बाईसन हॉर्न माडिया) अबुझ माडिया पहाड़ों के घने जंगलों में निवास करती है व दण्डामी माडिया समतल इलाके के जंगलों में निवास करती हैये लोग माडिया भाषा बोलते है. इन दोनों जनजातियों की संस्कृति आपस में मिलती जनजातियां बाहरी लोगों का अपने इलाके में आना पसंद नहीं करती. जब भी कोई व्यक्ति इनके इलाके में प्रवेश करता है तो यह असहज महसूस करते हैं व बाहरी व्यक्ति पर तीर कमान से हमला कर देते हैं. हमले के बाद इस जनजाति के लोग कर्कश ध्वनि के द्वारा

अपनी ताकत का एहसास कराते हैं. माडिया जनजाति के पुरुषों का स्वभाव नटखट व नाच गाने वाला होता है. यह लोग शराब के शौकीन होते हैं. इस जनजाति लोग अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए अपने देवताओं के सम्मान में लकड़ियों के द्वारा आग जला कर उसके चारों ओर नृत्य करते हैं. माडिया जनजाति सर्वाहारी जनजातियों की श्रेणी में आती है. इस जनजाति के लोग बहुत बहादुर होते है व इस जनजाति के पुरुष शिकार के लिए बाघ, भालू, तेंदुवे से भी लोहा लेने से नहीं कतराते.यु तो माडिया जनजाति बाघ का बेहद सम्मान करती है परंतु जब बाघ इन पर हमला करता है तो आत्म रक्षा में बाघ को भी मार सकते है. माडिया लोगों में घोटल परंपरा का पालन होता है व यह लोग काकसार नाम के कुल देवता की अराधना करते हैं.

हलबा जनजाति

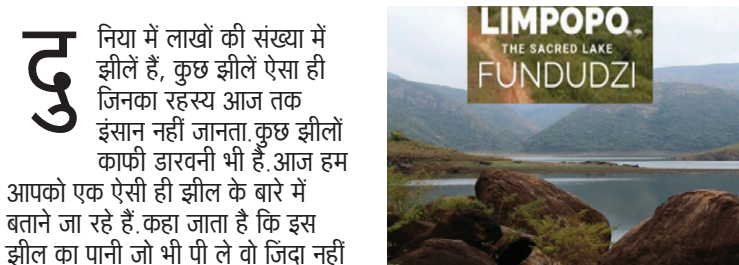
हलबा जनजाति छत्तीसगढ़ (बस्तर) में पाई जाने वाली एक विशाल जनजाति है इस जनजाति के लोग छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के इलाकों में निवास करते हैं. प्राचीन समय में यह जनजाति भी जंगलों में रहती थी परंतु आज के समय में इस जनजाति के लोग गांवो की तरफ भी पलायन कर रहे हैं. हलबा जनजाति 17 वीं शताब्दी में बस्तर राज्य के प्रमुख और सबसे प्रभावशाली जनजातीय समूहों में से एक थी व उस समय हलबा जनजाति बस्तर राज्य की राजनीति और सेना में सक्रिय थीं देश के विभिन्न हिस्सों में प्रवास के बाद हलबा जनजाति ने अपनी आजीविका के लिए अलग-अलग व्यवसाय को अपना लिया . जैसे कृषि, बुनाई, मजदूरी इत्यादि हलबा जनजाति की भाषा हलबी है, जो मराठी और ओडिया का संयोजन से बनी है व ये लोग देवी मीं दंतेश्वरी की पूजा करते है.

भतरा जनजाति

भतरा जनजाति प्राचीन काल में सम्पूर्ण बस्तर जिले में फैली हुई थी इस जनजाति के लोग कला और नाटक प्रेमी होते थे. इन्हें पेंटिंग करना व नाच गाना पसंद था. परंतु समय के साथ इस जनजाति के लोगो ने खुद में बदलाव किया और यह भी समय की दौड़ के साथ चलना सिख गए. आज भतरा जनजाति के लोगो ने आधुनिक बनाा शुरू कर दिया है. इस जनजाति के लोग आज कल शहरों में रोजगार की लिए निवास करते हैं. प्राचीन समय में इस जनजाति के लोगो का प्रिय भोजन केकड़ा व पक्षियों का मांस था.

मुरिया जनजाति

मुरिया जनजाति को बस्तर की मूल जनजाति कहा जाता है अर्थात इस जनजाति के लोग हमेशा से इस इलाके में रहे हैं इस जनजाति के लोगो को श्रृंगार करना व कलात्मक वस्तुएं बनाना पसंद है. मुरिया जनजाति में माओपाटा के रूप में एक आदिम शिकार नृत्य किया जाता है जिसमे इस जनजाति के सभी पुरुष बढ़ चढ़ कर हिस्सा लैते है. नृत्य के समय युवा पुरुष नर्तक अपनी कमर में पीतल अथवा लोहे की घंटियां बांधे रहते है साथ में छत्री और सिर पर आकर्षक सजावट कर नृत्य करते है.



दुनिया में लाखों की संख्या में झीलें हैं, कुछ झीलें ऐसा ही जिनका रहस्य आज तक इंसान नहीं जानता.कुछ झीलों काफी डारवनी भी हैं. आज हम आपको एक ऐसी ही झील के बारे में बताने जा रहे हैं. कहा जाता है कि इस झील का पानी जो भी पी ले वो जिंदा नहीं बचता है और जल्द ही उसकी मौत हो जाती है. यह रहस्यमयी झील दक्षिण अफ्रीका के लिंपोपो प्रांत में है. इसे फुन्दूजी झील के नाम से जाना जाता है. स्थानीय लोगों के अनुसार, किवंदती है कि इस जगह से प्राचीन काल में एक कोढ़ी व्यक्ति जो कारी लंबा सफर करके यहाँ आया था, उसे लोगों द्वारा भोजन और आश्रय नहीं दिया गया. कहा जाता है कि इसके बाद उस व्यक्ति ने लोगों को श्राप दिया और झील में प्रवेश किया और फिर गायब हो गया.

कहा जाता है कि झील के अंदर से आज भी डूबे हुए लोगों के रोने, ड्रम बजने की आवाजें आती रहती हैं. स्थानीय लोगों का यह भी कहना है कि पहाड़ों पर मौजूद इस झील की रक्षा एक विशालकाय अजगर करता है. इस अजगर को प्रसन्न करने के लिए हर साल वेन्दा

आदिवासी एक नृत्य उत्सव का आयोजन करते हैं, जिसमें कुवारी लड़कियां नाचती हैं. कहा जाता है कि झील प्राचीन काल में भूस्खलन के कारण बनी थी जिसने मुटाली नदी के प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया था, और अब यह एक रहस्य है कि

ऐसा क्या है कि इसका पानी पीने के बाद व्यक्ति कि मौत हो जाती है. कुछ लोगों का मानना है कि इस झील के पानी में कोई खतरनाक जहरीली गैस मिली हो सकती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है.



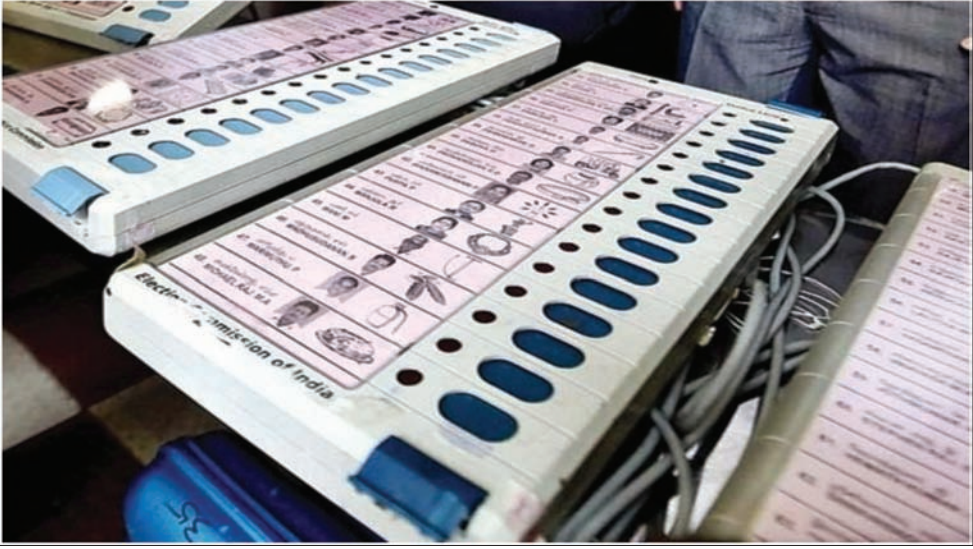
इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के बाद अब ब्लॉकचेन वोटिंग सिस्टम की सुगबुगाहट



डॉ. राघवेंद्र शर्मा

आज जब स्वयं को विकासशील और विकसित कहने वाले अनेक राष्ट्र मतपत्र आधारित चुनाव प्रणाली में ही उलझे हुए हैं, तब हमारा भारत देश अत्याधुनिक चुनाव प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तक का सफर तय कर चुका है।

वैश्विक स्तर पर स्थापित सत्य है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। एक ऐसा देश जहां लगभग डेढ़ अरब लोग निवास करते हैं। जनसंख्या के लिहाज से यह इतना बड़ा आंकड़ा है कि भारत का एक-एक शहर अपने भीतर एक से अधिक राष्ट्र समाहित कर लेने की हद तक फैला हुआ है। फिर भी हमारे देश के नागरिक बेहद आधुनिक चुनाव पद्धति के माध्यम से ग्रामीण, शहरी, जनपदीय, जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर भली भांति हर प्रकार की सरकारों का गठन लोकतांत्रिक प्रणाली से कर रहे हैं। आज जब स्वयं को विकासशील और विकसित कहने वाले अनेक राष्ट्र मतपत्र आधारित चुनाव प्रणाली में ही उलझे हुए हैं, तब हमारा भारत देश अत्याधुनिक चुनाव प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन तक का सफर तय कर चुका है। एक जमाना ऐसा था जब हमारे यहां भी मतपत्र प्रणाली पर आधारित चुनाव प्रक्रिया अपनाते हुए अनेक प्रतिकूल, बेहद खतरनाक परिणाम भी देखे। कई दशकों तक येन केन प्रकारेण सत्ता पर काबिज बने रहने अथवा सत्ता पर काबिज होने के लिए मतदान प्रणाली की सात्विकता का हरण किया जाता रहा। जिसकी लाठी उसकी भैंस की तर्ज पर अनेक अवसरवादी, सत्ता लोलुप और नैतिकता से लगभग नाता तोड़ चुके घाघ राजनेता बूथ कैप्चरिंग करते रहे। नकली मत पेटियों से असली मत पेटियां बदली जाती रहीं। चुनावी टीम को एक प्रकार से अपहृत करते हुए मनपसंद उम्मीदवार के चुनाव चिन्ह पर यंत्रवत ठपे लगाए जाते रहे। इस पाप पूर्ण कृत्य का विरोध करने पर जागरूक मतदाताओं, चुनाव कराने वाले कर्मचारियों, अधिकारियों, पत्रकारों को मौत के घाट उतारा जाता रहा। फल स्वरूप एक समय ऐसा भी आया जब गांव की पंचायत से लेकर देश की लोकसभा तक, विभिन्न सदनों में, बाहुबल के बल पर जीत कर आए, आपराधिक पृष्ठभूमि के जनप्रतिनिधियों की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ गई। जब देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न चुनाव रक्त रंजित होने लगे, तब देश के प्रबुद्ध वर्ग को चिंता हुई?। यह विमर्श किए जाने लगे कि ऐसा क्या किया जाए, जिससे चुनाव में रक्तपात ना हो। निर्वाचित होकर भी वही लोग सदन में पहुंचे मतदाता जिन्हें स्वेच्छा से चुनना चाहते हों। तब देश के सामने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का विकल्प सामने आया। तमाम अध्ययनों के बाद, कोई खामी शेष न रह जाए यह सुनिश्चित करने के बाद, अपराधी किस्म के नेता बूथ कैप्चरिंग ना कर पाएं यह संतुष्टि करने के बाद, अंततः देश ने ईवीएम यानि कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव प्रणाली को अपना लिया। इस प्रकार वर्ष 1982 में केरल राज्य के उत्तरी पारागुरु विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में पहली बार ईवीएम आधारित चुनाव प्रणाली का इस्तेमाल किया गया। यह



चुनाव उम्मीद से कहीं आगे जाकर शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। मतदान के परिणाम भी पारंपरिक मत पत्रों पर आधारित चुनाव प्रणाली की अपेक्षा बहुत जल्दी प्राप्त हो गए। अपवाद स्वरूप प्राप्त बेहद सीमित आपत्तियों के अलावा कोई उल्लेखनीय खामी सामने नहीं आई, जिसके चलते इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव प्रणाली को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करने का निर्णय लिया गया। बाद में जब विधानसभाओं और लोकसभा चुनाव में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का प्रयोग शुरू हुआ तो इसकी पारदर्शिता और सात्विकता पर अनेक उर्गलियां उठीं। फल स्वरूप देश के चुनाव आयोग ने राज्यसभा, लोकसभा, विभिन्न प्रांतो की विधानसभाओं के अलावा कलेक्ट्रेटों में, और जहां तक संभव हो सकता था वहां तक इन मशीनों का प्रदर्शन किया। सभी स्तर के आम और खास लोगों को इसकी प्रक्रिया बताई व दिखाई गई। साथ में शिकायतों सुझाव एवं आपत्तियां मंगाई गईं। हर एक शिकायत, आपत्ति और सुझाव पर बारीकी से विचार विमर्श हुआ। जो सुझाव उचित लगे उन्हें व्यवहार में लाया गया। जिन शिकायतों अथवा आपत्तियों में तार्किकता दिखाई दी, उन्हें पूरी ईमानदारी से निराकृत किया गया। जब इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की सात्विकता, उनकी पारदर्शिता की लेकर व्यापक स्तर पर संतुष्टि काबिज हो गई, तब कहीं जाकर इस चुनाव प्रणाली को वृहद स्तर पर व्यवहार में लाया गया। यह बात और है कि चुनाव में मुंह की खाने वाले राजनेता और राजनीतिक दल, जीतने वाले सत्ताधारी दल पर और चुनाव आयोग पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों में धांधलियां करने के आरोप मढ़ते रहे। लेकिन वह लोग कभी भी कोई तार्किक तथ्य सामने ना रख सके, जिससे उनके आरोपों को सही न माना गया। वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन आधारित चुनाव

प्रणाली भली भांति चुनावी दायित्वों का निर्वहन कर रही है। सब कुछ ठीक-ठाक होने के बावजूद केवल चुनाव आयोग ही नहीं, अपितु देश इस बात को लेकर चिंतित है कि हमारे यहां मतदान का प्रतिशत अपेक्षाकृत अभी कम ही बना हुआ है। इस समस्या को लेकर जो तथ्य सामने आ रहे हैं, उनके मुताबिक देश के नागरिक बार-बार के चुनावों से तंग आ चुके हैं। बात सही भी है, कोई साल और महीना ऐसा नहीं बीतता जब देश के किसी प्रांत, जिले, नगर, जनपद अथवा गांव में चुनाव संपन्न ना होता हो। परिणाम स्वरूप आम आदमी तो बार-बार के चुनावों से तंग तो आया ही, चुनावी आचार संहिता के बने रहने से विकास कार्य भी प्रभावित बने रहते हैं। आम आदमी के साथ-साथ विकास की गति को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाने के लिए ही देश के प्रधानमंत्री श्री रॉड्र मोदी एक राष्ट्र एक चुनाव की पुरजोर वकालत कर रहे हैं। यदि यह चुनाव प्रणाली देश में लागू होती है तो फिर आम आदमी को विभिन्न पदों के निर्वाचन हेतु बार-बार मतदान केंद्रों पर नहीं भटकना पड़ेगा। इससे मतदाताओं के अंतर्गम में गहरे तक पैठ चुकी ऊब से छुटकारा मिलेगा तथा मतदान प्रतिशत को बढ़ाया जा सकेगा। इसी के साथ विकास कार्य भी निरंतरता के साथ संपादित किये जा सकेंगे।

इसका मतलब यह हुआ कि भारत की वर्तमान चुनाव प्रणाली बखूबी अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। उसकी पारदर्शिता और सात्विकता वैश्विक स्तर पर प्रामाणिकता प्राप्त कर चुकी है। ऐसे में यदि एक और नई चुनाव प्रणाली की बात की जाए तो फिर सवाल यह खड़ा होता है कि जब सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है तो फिर एक और नया प्रयोग क्यों? इसका जवाब कुछ यूँ हो सकता है कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है, यह सोचकर हाथ

पर हाथ रखकर बैठते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए - अभी भी चुनाव कराने के लिए लाखों पोलिंग बूथ, करोड़ों चुनाव अधिकारी - कर्मचारी, सुरक्षा बलों की व्यापक स्तर पर तैनाती, भारी पैमाने पर आर्थिक खर्चें तथा आम आदमी की मतदान केंद्रों तक आवाजाही, वह समस्याएं हैं जिनका हल हमें आज ही ढूंढना होगा। क्योंकि जैसे-जैसे मतदान प्रतिशत बढ़ेगा, व्यवस्थाएं, नियुक्तियां और खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ते चले जाने हैं। इन सभी के निराकरण स्वरूप दिमाग में एक संभावित चुनाव प्रणाली का ध्यान आता है, जिसका नाम है ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग सिस्टम। यदि इस प्रणाली पर व्यापक वार्ता, बहस, विमर्श आदि हों तो परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले सारगर्भित नतीजों से भारतीय लोकतंत्र के लिए नई संभावनाओं को तराशा जा सकता है। लेकिन इसके लिए, पहले हमें यह समझना होगा कि आखिर ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग सिस्टम काम कैसे करेगा। इसका सबसे पहले चरण होगा मतदाता का पंजीयन। यह आधार कार्ड या किसी डिजिटल आईडी का उपयोग कर-के चुनाव आयोग द्वारा ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन माध्यम से सत्यापित किया जा सकता है। दूसरे क्रम पर आती है मतदान प्रक्रिया। इसे संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग प्रत्येक मतदाता को एक डिजिटल टोकन अथवा कोड प्रेषित करेगा, जिसके माध्यम से मतदाता को वही है वही से मान्यता प्राप्त गैजेट को माध्यम बनाकर अपने मनपसंद उम्मीदवार के पक्ष में मतदान कर सकेगा। बदले में उसे डिजिटल स्वरूप में ही तत्काल मतदान की रसीद चुनाव आयोग द्वारा भेजी जा सकेगी। मतदाता द्वारा चुनाव आयोग को भेजा गया उपरोक्त मतदान ब्लॉक चैन सिस्टम में दर्ज होगा जिसे बदला नहीं जा सकेगा। तीसरे क्रम पर मतगणना की बारी आती है। होगा यह कि जैसे ही मतदान संपन्न होगा और मतगणना के लिए सिस्टम का सर्वर ऑन किया जाएगा, वैसे ही डिजिटल स्वरूप में मतगणना के परिणाम मतदान में इस्तेमाल किए गए गैजेट पर दिखाई देने लगेंगे। मतगणना में कौन आगे और कौन पीछे चल रहा है, यह रक्षण भी ठीक उसी प्रकार प्रदर्शित हो सकेगे जिस प्रकार स्टॉक मार्केट में शेयरों के भाव उछाल-चढ़ाव के रूप में देखा जाना प्रचलन में बना हुआ है। अंत में यह परिणाम भी देखा जा सकेगा कि चुनाव में कौन हारा और जीत किसके हिस्से में आई। ब्लॉक चैन वोटिंग सिस्टम के एक्सप्लोरर का उपयोग करके हार जीत का अंतर क्या रहा, यह भी बगैर लंबी प्रतीक्षा के तत्काल देखा जा सकेगा। खास बात यह कि इस चुनाव प्रणाली में भी डिजिटल रूप से दर्ज हुए आंकड़ों में किसी भी प्रकार का हेर फेर नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि सारा डेटा इंक्रेडिट और सुरक्षित ही रहने वाला है।

संपादकीय

पक्षपाती रवैया खत्म हो

वक्फ संशोधन कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दरम्यान सरकार ने आश्वासन दिया कि सेंटर वक्फ काउंसिल और वक्फ बोर्ड में किसी गैर-मुस्लिम की नियुक्ति नहीं की जाएगी। मौजूदा वक्फ संपत्तियों पर किसी तरह की कार्रवाई न करने तथा वक्फ संशोधन कानून, 2025 के कुछ प्रावधानों पर फिलहाल अमल न करने की बात भी थी। अदालत ने सरकार को जवाब देने के लिए सात दिन का वक्त दिया है। अगले आदेश तक वक्फ, जिसमें वक्फ बाय यूजर भी शामिल है, में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। न ही संबंधित कलेक्टर इन्हें कोई बदलाव करेगा। 1995 के अधिनियम के तहत जिन वक्फ संपत्तियों का पंजीकरण हुआ है, उनको अगली सुनवाई तक गैर-अनुसूचित न करने का स्पष्ट निर्देश भी दिया गया है। अदालत में वक्फ कानून की वैधता को इस आधार पर चुनौती दी गई थी कि जैन, सिख व अन्य अल्पसंख्यकों के धर्म पर ऐसे कानून लागू नहीं होते। जैसा कि नये कानून के अनुसार वही शख्स अपनी संपत्ति दान कर सकता है, जो कम से कम पांच साल से मुसलमान या गैर- हिन्दुओं को शामिल करने का रही है? इस कानून के पारित होने के बाद हुई हिंसा की भी निंदा की। हरियाणा, महाराष्ट्र, मप्र, असम, छत्तीसगढ़ व राजस्थान जैसे भाजपा शासित राज्यों में अलग-अलग याचिकाएं दायर की गई हैं। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के अनुसार वक्फ के पास देश भर में 8.7 लाख संपत्तियां हैं जिनकी अनुमानित कीमत 1.2 लाख करोड़ रुपये है। कोई भी चल/अचल संपत्ति वक्फ होती है, जिसे अल्लाह के नाम पर मुसलमान धार्मिक या परोपकार के मकसद से दान करता है। अल्लाह ही हमेशा उसका मालिक होता है। इस तरह का चलन मंदिरों से लेकर अन्य धर्मों में भी है। मंदिरों के पास बगैर कागजात वाली संपत्ति कम नहीं हैं। इसलिए सरकार को कानून बनाने हुए सभी धार्मिक स्थलों के अधिकार क्षेत्र वाली चल/अचल संपत्ति पर यह कानून लागू करना चाहिए था। पूर्वाग्रहों से भरे पक्षपात करने वाली मोदी सरकार को इससे बचना चाहिए था। वक्फ की आड़ में संप्रदाय विशेष को लेकर टिप्पणियां या नया कानून बनाने की जल्दबाजी देश की अखंडता पर प्रहार कर सकती है।

चिंतन-मनन

भौतिकवाद से उपजी दुर्गति

ऊंचा महल खड़ा करने के लिए किसी दूसरी जगह गड्डे बनाने पड़ते हैं। मिट्टी, पत्थर, चूना आदि जमीन को खोदकर ही निकाला जाता है। एक जगह टीला बनता है तो दूसरी जगह खाई बनती है। संसार में दरिद्रों, अशिक्षितों, दुखियों, पिछड़ों की विपुल संख्या देखते हुए विचार उठता है कि उत्पादित सम्पदा यदि सभी में बंट गई होती तो सभी लगभग समान स्तर का जीवन जी रहे होते। अभाव एक ही कारण उत्पन्न हुआ है कि कुछ लोगों ने अधिक बटोरने की विज्ञान एवं प्रत्यक्षवाद की विनिर्मित मान्यता के अनुरूप यह उचित समझा है कि नीति, धर्म, कर्तव्य, शालीनता, समता, परमार्थ परागणता जैसे उन अनुबंधों को मानने से इकार कर दिया जाए जो पिछली पीढ़ियों में आस्तिकता और धार्मिकता के आधार पर आवश्यक माने जाते थे। पशुओं को जब नीतिवान परोपकारी बनाने के लिए बाधित नहीं किया जा सका, तो बन्दर से मानव रूप में विकसित मनुष्य को यह किस आधार पर समझाया जा सके कि उसे उपार्जन तो करना चाहिए पर उसको उपभोग में ही समाप्त नहीं कर देना चाहिए। विज्ञान के साथ सज्ञान का समावेश यदि रह सका होता तो भौतिक और आत्मिक सिद्धान्तों पर आधारित प्रगति का लाभ हर किसी को समान रूप से मिलता पर किया क्या जाए? भौतिक विज्ञान जहां शक्ति व सुविधा प्रदान करता है, वहीं प्रत्यक्षवादी मान्यताएं नीति, धर्म, संयम, स्नेह, कर्तव्य आदि को झुठला देती हैं। ऐसी दशा में उईडता अपनाए हुए समर्थ का दैत्य-दानव बन जाना स्वाभाविक है।



योगेश कुमार गोयल

क्रिसमस के अलावा 'ईस्टर' को भी ईसाई धर्म का सबसे बड़ा और प्रमुख पर्व माना जाता है। दरअसल दोनों ही पर्व ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं। प्रतिवर्ष गुड फ्राइडे के तीसरे दिन रविवार को मनाया जाने वाला 'ईस्टर संडे' ईसाइयों का महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है, जो इस वर्ष 20 अप्रैल को मनाया जा रहा है। गुड फ्राइडे के दिन ईसा मसीह के बलिदान को याद कर जहां ईसाई धर्म के लोग दुखी होते हैं, वहीं ईस्टर संडे पर उनकी खुशी दोगुनी होती है क्योंकि ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार गुड फ्राइडे के बाद आने वाले रविवार को दुनिया को प्रेम और करुणा का संदेश देने वाले शांति के मसीहा ईसा मसीह पुनः जीवित हुए थे और उनके जीवित होने की खुशी में ईसाई धर्म को मानने वाले लोग 'ईस्टर संडे' मनाते हैं। इस पवित्र दिन को 'ईस्टर दिवस' तथा 'ईस्टर रिविवा' के नाम से भी जाना जाता है। ईस्टर ईसाई समुदाय के लिए खुशियां मनाने का प्रमुख पर्व है, जिसे ईसा मसीह के चमत्कारों में से एक माना जाता है। ईसाई धर्म के प्रसिद्ध ग्रंथ 'बाइबल' में भी उल्लेख है कि ईस्टर संडे के दिन पुनः जीवित होने

के बाद ईसा मसीह 40 दिन बाद तक पृथ्वी पर रहे और उस दौरान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रेम एवं करुणा का पाठ पढ़ाया तथा फिर स्वर्ग चले गए। नए जीवन और जीवन के बदलाव के प्रतीक के रूप में मनाए जाने वाले ईस्टर पर्व को भाईचारे और स्नेह का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि इस दिन ईसा मसीह के जीवित होने के बाद उनको यातनाएं देने वाले और सूली पर चढ़ाने वाले लोगों को भी बहुत पश्चाताप हुआ था। ईसाई धर्म की मान्यताओं के अनुसार 'ईस्टर' शब्द की उत्पत्ति 'ईस्त्र' शब्द से हुई थी। यूरोप में प्रचलित पौराणिक कथाओं के अनुसार ईस्त्र वसंत और उर्वरता की एक देवी थी, जिसकी प्रशंसा में अप्रैल माह में उत्सव होते थे। इन उत्सवों के कई अंश यूरोप के ईस्टर उत्सवों में आज भी देखने को मिलते हैं। इसीलिए इसे नवजीवन या ईस्टर महापर्व का नाम दे दिया गया। कुछ देशों में ईस्टर दो दिन तक भी मनाया जाता है और दूसरे दिन को ईस्टर सोमवार कहा जाता है। ईस्टर संडे के दिन ईसाई धर्म के लोग गिरजाघरों में जाकर यीशु को याद करते हैं, उनकी याद में मोमबतियां जलाते हैं, बाइबिल पढ़ते हैं और अपने प्रभु यीशु के जीवित होने की खुशी में एक-दूसरे को बधाई देते हैं। ईस्टर रविवार के पहले सभी गिरजाघरों में रात्रि जागरण तथा अन्य धार्मिक परंपराएं पूरी की जाती हैं और असंख्य मोमबतियां जलाकर यीशु में अपना विश्वास प्रकट किया जाता है। ईस्टर पर सजी हुई मोमबतियां अपने घरों में जलाना तथा मित्रों में बांटना ईसाई धर्म में एक प्रचलित परम्परा है। ईस्टर के पहले वाले रविवार को 'खजूर रविवार' के नाम से जाना जाता है। इस संबंध में मान्यता है कि इसी रविवार के दिन ईसा मसीह ने यरुशलम में प्रवेश किया

था। ईसाई विद्वानों के मतानुसार 29ई. को ईसा मसीह गधे पर सवार होकर यरुशलम पहुंचे थे और वहां के लोगों ने खजूर की डालियों से उनका स्वागत किया था, इसीलिए इस दिन को 'पाम संडे' कहा जाता है। यहीं यरुशलम में उनके खिलाफ षड़यंत्र रचा गया और राजद्रोह के आरोप में शुक्रवार को सूली पर चढ़ा दिया गया। ईसा मसीह को सूली पर लटकाने की घटना को गुड फ्राइडे के नाम से जाना जाता है और इसके तीसरे दिन यानी संडे को ईसा मसीह के दोबारा जीवित होने की घटना को ईस्टर संडे के रूप में मनाया जाता है। ईसाई धर्म में इस घटना को इस बात प्रमाण भी माना जाता है कि सत्य कभी नष्ट नहीं हो सकता। ईस्टर की आयोजना उष्णकाल में ईसाई महिलाओं द्वारा की जाती है क्योंकि माना जाता है कि यीशु का पुनरुत्थान इसी वक्त हुआ था। ईसाई धर्म की मान्यताओं के अनुसार जब ईसा मसीह को मृत्युदंड दिया गया तो उनके अनुयायी बहुत निराश और हताश हो गए थे लेकिन गुड फ्राइडे के तीसरे दिन रविवार को मरियम मदीलैनी नामक एक महिला ईसा मसीह की कब्र पर गई, जहां उस समय गहन अंधकार छाया था। महिला ने देखा कि ईसा मसीह की कब्र पर पत्थर नहीं है। उसने इसके बारे में ईसा के अनुयायियों को बताया, जिन्होंने वहां आकर देखा तो कब्र में केवल कफन पड़ा था, ईसा मसीह नहीं थे। कुछ देर बाद वे सभी वहां से चले गए लेकिन महिला वहीं बैठकर रोने लगी। तभी उसने देखा कि कब्र में जहां ईसा मसीह का शव रखा था, वहां दो स्वर्णदूत सफेद कपड़े पहने खड़े थे, एक ईसा मसीह के सिर के पास और दूसरा पैरों के पास। दोनों देवदूतों ने महिला से रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि वे उसके ईसा



मसीह को लेकर चले गए हैं। तभी उसने वहां ईसा मसीह को देखा। देवदूतों ने उसे कहा कि वे अब परम पिता के पास जा रहे हैं। इस घटना के तुरंत बाद महिला फिर ईसा के अनुयायियों के पास आई और उनको बताया कि कैसे प्रभु ईसा मसीह पुनः जीवित हो गए हैं। ईसाई मान्यताओं के अनुसार ईसा मसीह पुनः जीवित होने के बाद 40 दिन तक पृथ्वी पर रहे और अंत में वे अपने कुछ शिष्यों के साथ आसमान में चले गए। ईस्टर के दिन ईसाई धर्म के लोग अपने घरों को अंडों से सजाते हैं और एक-दूसरे को अंडे उम्हार स्वरूप भी देते हैं। दरअसल ईस्टर पर अंडों का विशेष महत्व है क्योंकि ईसाई धर्म के लोग अंडे को नया जीवन और उमंग का प्रतीक मानते हैं। (लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

लोकतंत्र : असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए

पर, जिसे छात्र 'अपवित्र' मानते हैं। कहा गया कि यह विरोध जातिगत भेदभाव, एक दलित प्रोफेसर के साथ अन्याय, और प्रशासन की असंवैदनशीलता के खिलाफ था। छात्रों ने न सिर्फ कक्षाओं को गोबर से लीपा, बल्कि प्रिंसिपल के घर तक जाकर वहां भी प्रदर्शन किया। भारत में गोबर का उपयोग सदियों से पवित्रता, शुद्धता और स्वदेशी जीवन शैली के प्रतीक के रूप में होता आया है। लेकिन इस मामले में इसका प्रयोग गहराई से व्यांगत्मक था। यह ऐसा प्रतीक था जो न केवल सत्ता की 'पवित्रता' को उलट देता है, बल्कि दिखाता है कि छात्र अब विरोध के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर सत्ता की भाषा को उसके ही प्रतीकों से जवाब दे रहे हैं। यह विरोध दरअसल उस छत्र सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर चोट करता है जो गाय, गोबर और गंगा जल को पवित्र मानता है, लेकिन दलित, आदिवासी व वंचित समुदायों की पीड़ा को अपवित्र विषय मानता है। भारतीय विविद्यालय धीरे-धीरे उस विचारभूमि से हटते जा रहे हैं, जहां असहमति को प्रोत्साहन मिलता था। आज यदि कोई छात्र या प्रोफेसर सत्ता के खिलाफ बोलता है, तो उसे 'राष्ट्रविरोधी', 'गद्दार', या 'विकास-विरोधी' कहा जाने लगता है। कैम्पस अब लोकतांत्रिक संवाद के केंद्र नहीं, बल्कि डर के घेरे बनते जा रहे हैं। छात्रों के इस कदम को केवल 'असभ्यता' कह कर खारिज करना आसान है, लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि यह घटना उस निराशा और हताशा की उपज है जो वर्षों से भीतर ही भीतर सुलग रही है। जब संवाद

के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, तो प्रतीकात्मक और चौकाने वाले कदम ही विकल्प बनते हैं। यह विरोध 'हिंसक' नहीं था, लेकिन 'सुसिंघत' भी नहीं था। निश्चित रूप से गोबर से दीवारें लीपना किसी भी संस्थान के लिए अनुशासनहीन हरकत मानी जाएगी। लेकिन यह भी सोचना होगा कि जब छात्र अपनी बात कहने के लिए इतना असामान्य तरीका अपनाते हैं, तो समस्या छात्रों में नहीं, व्यवस्था में भी है। वे किस हद तक खुद को असहाय और अनसुना समझते हैं, यह इस घटना से जाहिर होता है। अलबत्ता, यह विरोध मानसिक और सांस्कृतिक असहजता पैदा करने वाला जरूर था। छात्रों का प्रदर्शन प्रिंसिपल के निजी घर तक पहुंचाना न केवल प्रतीकात्मक था, बल्कि दशातां है कि छात्रों को अब संस्थागत दायरों में न्याय की उम्मीद नहीं रही। यह खतरनाक संकेत है-न केवल शिक्षा व्यवस्था के लिए, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी। मोडिया ने इस घटना को सनसनीखेज ढंग से दिखाया -'छात्रों ने लीपा गोबर!', 'गाय के नाम पर राजनीति फिर से!'-लेकिन दुर्भाग्यवश किसी ने यह नहीं पूछा कि छात्र ऐसा क्यों कर रहे हैं? किस घटना ने उन्हें इस हद तक पहुंचाया? किसने संवाद के रास्ते बंद किए? मोडिया अक्सर लक्ष्णों पर बहस करता है, लेकिन बीमारी की जड़ तक नहीं जाता। सत्ता जब गाय और गोबर को संस्कृति का हिस्सा मान कर उन्हें नीतियों में शामिल करती है-जैसे गोबर आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना, पंचगव्य को चिकित्सा बताना-तब वह 'धर्म-सम्मत' होता है।



लेकिन जब यही प्रतीक छात्रों के विरोध में आते हैं, तो वे 'अश्लील' और 'असभ्य' बन जाते हैं। यही सत्ता का दोहरापन है। छात्रों का विरोध सत्ता के इस पाखंड की पोल खोलता है-दिखाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग केवल सत्ता के लिए सुरक्षित नहीं है, बल्कि जनता भी उन्हें विरोध के औजार बना सकती है। इस घटना के बहाने जरूरी हो गया है कि विविद्यालयों में संवाद की संस्कृति को फिर से मजबूत किया जाए। यह घटना प्रतीकात्मक चेतावनी है-शिक्षा का मंदिर यदि सत्ता की चौकी बन जाए, तो छात्र वहीं पर 'शुद्ध यज्ञ' करने लगते हैं। गोबर का यह विरोध हमें याद दिलाता है कि लोकतंत्र में असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए -वरना दीवारें ही नहीं, सोच भी गंधाने लगती है।

New Waqf law reeks of divisive agenda

Irecently read a blog post by Shriya Handoo, an advocate from the Kashmiri Pandit community. It said, “The Waqf amendments aren’t about transparency — they’re about tyranny”. I could not agree more with that analysis. The whole rigmarole built around the legislation that was recently voted into law by Parliament was entirely unnecessary. The entire Opposition decided to participate in the debate and expose the ruling party’s real intent. It was high time these parties displayed unity and maturity. The real intent of the party in power was revealed by our Prime Minister himself when he addressed the ‘Rising Bharat Summit’, organised by a media group, on April 8 in New Delhi. He alleged that the Congress’ politics of appeasement had led to the Partition, even as he accused the party of tweaking the Waqf law “to serve the interests of Muslim fundamentalists and land-grabbers”.

The RSS has always claimed that Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru were responsible for the Partition. What I did not know was that the Waqf law was an instrument used for that purpose. Most friends of mine were blissfully unaware of the Waqf role in the implementation of the two-nation theory propounded by Muhammad Ali Jinnah. (A caveat — I don’t see any connection between the Partition and the Waqf law).

I knew that the 1995 Act (first amended in 2013) was being misused by unscrupulous operators connected to the Waqf Board and scamsters on the lookout for avenues to make a quick buck. Two respectable Muslim sisters, friends of my elder daughter, had complained once to me about some Muslim residents of Mahim (Mumbai) eyeing their property located along the Mahim beach, near the place where the would-be land-grabbers resided. The Waqf Board was mentioned. I had conveyed these fears to the police in charge of that area with a request to safeguard the legal rights of two defenceless ladies. The sisters were running an orphanage for destitute Muslim girls on the prime property owned by a trust set up by their deceased father. The girls were housed, fed, clothed and cared for by the staff employed by the trust. Except for the Gurkha watchman, the entire staff was female. They needed the assurance of police assistance in case of an emergency. And that was why the sisters had approached me.

There are wicked elements in every community waiting to pounce on the weak and the defenceless. Greed is not confined to Muslims. Wherever money flows, greedy individuals of that community or belonging to the government agency concerned plot and plan to dig their own soiled hands into the pie. Surely, our Prime Minister knows that. The machinations he is trying to prevent in the Waqf administration are also prevalent in other religion-based trusts.

Any independent but fair-minded observer will conclude that the BJP has picked on the Waqf boards as they are connected to the Muslim minority. The principle of “Sabka Saath, Sabka Vikas” that Modi glibly parrots at the drop of a hat is soon forgotten when it comes to this minority, in particular. Modi asserts that the amendments to the Waqf Act are necessary in the interests of society, including poor Muslims. These lofty sentiments are neither shared, unfortunately, by those entrusted with the implementation of the laws nor by the Muslim masses that the PM says will be benefited by his concern.Ever since the BJP-led government was installed in 2014, the Muslim community has felt that it is being targeted for punishment, meted out unjustly. Lynching of cattle traders who are mostly Muslims and accusations of ‘love jihad’ against Muslim boys in love with Hindu girls has become a regular feature over the past decade. One of the first pieces of legislation targeting them was the Citizenship Amendment Act (CAA). The Act itself was supposed to reassure Hindus, Sikhs, Christians and Parsis migrating from Pakistan, Bangladesh and Afghanistan of acquiring Indian citizenship on demand, a facility already enjoyed by them before this BJP government arrived on the scene. Thousands, nay lakhs, of Hindu refugees from Pakistan and Bangladesh had already been granted Indian citizenship and rehabilitated.

Europe’s waning clout in Russia-Ukraine war

The moot point is that not a single non-warring European country will be able to take the rate of fatality which both Russia and Ukraine are facing.

Since February 2022, the longest and deadliest Europe-origin post-World War-II Russia-Ukraine bloodshed has been raging, ruining millions of lives, livelihoods and economics. It has divided the world, especially the West, more than ever before owing to the sensational reversal of the traditional anti-Russia policy of sanction, boycott and diplomatic isolation adopted by US President Donald Trump. Trump’s direct talks with Russian President Vladimir Putin to end the war, bypassing the 50-odd nations of Europe (including the 27-nation European Union) and Ukraine, have irked the West the most.

Understandably, both the EU and non-EU London, the trusted ally of Washington since the 1940s, are unimpressed. The direct Trump-Putin link sans Europe constitutes a snub to the old West and has severely jolted its status and stature in world polity. The West (Europe) has become irrelevant in its own eyes, being cut to size by two non-Europeans. The US as a geographical non-Europe is understood, but why and how is the pariah Russia non-Europe? It is because the Big Four (London, Paris, Berlin, Rome) don’t like considering Russia a European state. To them, Russia is "Eurasian" because its bigger portion falls in Asia. Hence, racially, Russia is Slav and does not come up to the standard of the victors of heartland Europe. Russia is in the periphery, a fringe element prying and trying to be gregarious with the ‘gorgeous Anglo-Saxons’.In the eyes of mainland Europe, Russia is lowly and an outcast. Yet, that lowly and pariah Moscow suddenly stands more close to Washington than the ‘sophisticated and upper crest of Anglo-Saxon club’ members of the old imperialist powers. Europe’s war cannot be resolved without its participation in the conference room, say London, Berlin and Paris. Hence, a restless EU is hopping from summit to summit. London, Brussels, Paris, Munich are busy hosting 30 to 50 nations, whose conspicuous pretension revolves around ending the 38-month-old war, which has already damaged the economy, destabilised the established government and created racial tension. The Grand Europe is on the wane towards the ground as it gazes from the high table.

In the eyes of EU leaders, therefore, Europe has to be revived, defended and taken care of solely with the gun; and who else but the Germans to do the job? Post World War II, the Germans were war-wary, dormant and sullen. How profound is their transformation now? Wanting to be in the forefront of the combined armed forces operating in the war-ravaged Ukraine, Germany is toying with the idea of providing the long-range Taurus missile to Kiev and

deploying troops in states bordering Russia. This is a bad omen. It can be construed to be a prelude to the repeat provocation of history’s murderous assault of Germany’s Hitler in 1941.The Ukraine-Russia conflict, without doubt, has been a shadow proxy war between Russia and the West, led by the USA. With the sudden American exit from the NATO-EU team confronting Russia through Ukraine, the burden of European defence has swung from Washington to the EU’s Warsaw, which is bent on the continuation of fire, rather than ceasefire.The moot point, nevertheless, is that in the midst of such a bellicose

months?These are the numbers of the big two powers only. France is an exception. Paris has traditionally been different owing to its linguistic pride and it being culturally different from the English-speaking London-Washington’s special relationship. However, Europe also has several tiny nations for which even the death of 2,000 soldiers each will be the end of their army. In 2005, Estonia had 4,934 active soldiers, Latvia 1,817 and Lithuania 11,510. The numbers thereof today stand at 1,300 combatants for Estonia, 1,500 for Latvia and 10,250 for Lithuania.

Post the 1991 USSR breakup, Europe drastically reduced its combatants, neglected defence factories and the robust aviation industry and lowered warship yard production. The US-led NATO and EU expanded the economics and extended the politico-diplomatic geography towards the Russian underbelly through a fresh induction of former Moscow allies and satellite states into NATO.

Consequently, Russia rightly felt threatened and couldn’t wait for a possible breach of its last frontier of Ukraine falling into the lap

of NATO. War became inevitable and its disastrous results are there for all to see.

Yet, the West hasn’t learnt the lessons of history. War is necessary for the revival of its arms industry and using Ukraine as the sole frontline coffins, which cannot be fought by the rest of Europe owing to the inevitable colossal loss of manpower of the already diminishing demography of white Christians.Be that as it may, one thing is certain. Post the Russia-Ukraine war, the borders and geography of the war zone are bound to undergo monumental changes. There could emerge several beneficiaries of the parcelled out Kiev land as both Russia and the USA today are reportedly talking about the "partition of Ukraine."

Will the EU stare and endure this happening? The scenario is murky and hazy. The continuation of violence appears more than a possibility.



European stand on the Russia-Ukraine war, not a single non-warring European country will be able to take the rate of fatality which both Russia and Ukraine are facing. Let us peruse the figures of Military Balance 2025 (International Institute for Strategic Studies, London). Will Germany be able to accept the death of 20,000 men when its entire army today consists of 60,650 soldiers? Incidentally, in 2005, its strength was 1,17,900 and it was deployed in 13 overseas destinations. Today, it is reduced to a few hundred soldiers in seven stations. Similarly, the British PM appears to be vocal on doing a joint European force tour of Ukraine as some sort of "peace-keeping" duty inside Ukraine to deter future Moscow aggression. Again, the reduced number of the Royal Army is too conspicuous to be missed: from a 2,77,560-strong army in 2005, it has come down to 78,800. Will the famed Royal troops be able to replenish the loss of 30,000 soldiers the way Moscow and Kiev have been coping for last 38

The deep rot

BluSmart, PACL scams expose regulatory cracks



sheen until it was too late. Red flags were allegedly visible to insiders, yet the public and regulators failed to act. The PACL benefited from alleged political proximity that allowed a massive Ponzi scheme to

flourish unchecked. The common thread between the two scandals is the erosion of public faith. That an EV startup, hailed as a clean mobility pioneer, could be implicated in fund diversion is as troubling as politicians being linked to a Rs 48,000-crore investor fraud.These cases demand more than piecemeal action.

A dual strategy is needed: tighten disclosures for early-stage ventures and enhance scrutiny of firms receiving public or institutional funds. Regulators like SEBI and ED need better coordination, speed and sharper enforcement powers. Political parties must stop shielding bad actors, whether entrepreneurs or elected representatives. India's push for climate tech and investor-driven growth cannot rest on compromised ethics. Whether it's refunding BluSmart wallet users or recovering PACL assets, restoring public confidence must be the top priority.

Nasha-Mukt Bharat: Lofty goals, lingering gaps

It is important to restrict access of even alcohol to the younger people as its use leads to the intake of other substances.

Drug abuse is a serious public health problem in the country, particularly in some states, including Punjab. This subject has been a matter of serious concern and political discussion in Punjab for many years. The most vulnerable group is the young generation. Punjab, which was a transit state initially, is now a consumer state. Easy access, unemployment, absence of political will and vested interests of some for easy money are possibly the main factors responsible for the growth of this menace. There is also a conspiracy to spread drug abuse from across the border, virtually drug terrorism.Dependence on any intoxicant not only affects the individual's health but also disrupts the whole family. As such, it is a very serious psychosocial and medical problem.The solution to drug abuse control includes the reduction of both supply and demand. Of course, it also involves special care and support for the victim addicts. Supply and demand reduction constitutes a two-pronged action for handling this social disease. The reduction of supply depends on the efforts of the law enforcement and investigating authorities, whereas demand reduction involves primary preventive efforts and social integration.Recent efforts of the state to handle the supply arm are praiseworthy. Earlier also, half-hearted efforts have been done, but exposure of the possible link between the drug mafia and the law enforcement authorities has only shown cosmetic results. Hopefully, this time the efforts will be pursued seriously, including in cooperation with the adjoining states till the desired results are achieved.To reduce the demand, dedicated efforts based on local social set-up and culture are needed.

Various studies show that the age of 16-21 years is quite sensitive and vulnerable insofar as developing



the habit of consuming alcohol/drugs is concerned. This age group spends most of the time in high school/college or at home.The departments of education and health as well as local social set-ups can, thus, play an important role in reducing the demand for drugs. Education and awareness about drug abuse at the school and college levels should be prioritised. Along with health professionals, teachers of social science, physical education and psychology can be tasked with this responsibility. The promotion of health and social well-being among individuals includes a wide variety of appropriate interventions, education and awareness about the ill effects of drug abuse. Emphasis must be laid on the benefits of following a healthy lifestyle, including diet and regular sports, in this preventive programme.Another important aspect of demand reduction is restricting access to these substances. It

is important to restrict access of even alcohol to the younger people as its use leads to the intake of other substances. The law does not permit people below the age of 21 to buy or drink alcohol. Unfortunately, these restrictions are not followed strictly by the law authorities.If the drug costs more, there are fewer drug users and he demand is low for illegal drugs. However, low availability of one drug may result in the abuse of other available substances. Thus, efforts are needed to reduce access to all such substances, including alcohol.The alcohol business has become an attractive revenue-earning mode in most states. The governments do not realise the serious ill effects of alcohol on health and its economy. Revenue generation from alcohol business is counterproductive. It is, thus, important to strictly follow the rules for alcohol use in youngsters. Liquor shops must be kept at a fair distance from educational institutes.An dedicated group of experts at the state level may help in planning, supervising and monitoring the drug demand reduction programme. The recent padyatra undertaken by the Governor of Punjab to make people aware of the menace of this is commendable and would help in spreading awareness in the community. Earlier, a cycle rally was held at Sangrur under the command of the Chief Minister and Finance Minister of Punjab.In Haryana, the Chief Minister is undertaking cycle rallies to create awareness about drug abuse. Such efforts create an awareness impact and encourage the active involvement of the society. The community involvement, both in cities and villages, should be a major agenda.Unemployment is another factor

which forces the young people to drug addiction. Skill-based courses, which can ensure employment options to the young generation, must be started in colleges. The skilled workers should be supported and guided in gaining employment not only at the state leel but also across the country and abroad.The National Drug Demand Reduction Programme (DDRP) includes information, awareness campaigns, education and early intervention in victims. The Ministry of Social Justice and Empowerment has been implementing the central scheme for the prevention of alcoholism and drug abuse.The first national survey on the extent and pattern of substance use in India was released in February 2019. As per the report, alcohol is the most commonly used psychoactive substance.

The Social Welfare Ministry has formulated the National Action Plan for Drug Demand Reduction (NAPDDR-2018-2025).The Nasha-Mukt Bharat Abhiyan aims to educate, inform and communicate valid and accurate information about drug abuse among the masses, with a special focus on youth and women. The programme was launched by the Ministry of Social Justice and Empowerment on August 15, 2020. But we have yet to see its results on the ground level.The drug demand reduction programme depends on political will and community cooperation. The victims and their families also need a humane approach. The therapeutic efforts need to be evidence-based to avoid quackery.The efforts of the Punjab Government and the adjoining states must continue with commitment and seriousness. The communities must unite, irrespective of political linkage.

Now You Can Name Up To 4 Nominees In Your Bank Account: Here’s What Changes

New Delhi. Bank accounts now have more flexibility when it comes to managing their finances. As a recent change in the law, now you can appoint up to four nominees for your bank account instead of just one. This update follows the passing of the Banking Laws (Amendment) Bill in the Rajya Sabha and is expected to help reduce unclaimed deposits while making it easier to plan and manage financial assets. Earlier, bank account holders were allowed to name just one nominee to receive their funds after their passing. Now, with the updated rule, you can appoint up to four nominees. This gives you more control over how your money is distributed. The amendment also introduces two ways to set nominations—simultaneous (all nominees share the funds together) and successive (funds go to the next nominee if the first isn’t available)—making the process of fund transfer more flexible and clear.

Simultaneous vs Successive Nominations: What’s the Difference? Here’s a simple breakdown of the two nomination options now available for bank account holders:

Simultaneous Nomination

- You can assign specific percentages of your account balance to multiple nominees.- The funds will be distributed exactly as per your chosen split.

Example: If your account has Rs 10 lakh and you nominate three people with a 40:30:30 split, the distribution will be Rs 4 lakh, Rs 3 lakh, and Rs 3 lakh respectively.

Successive Nomination

- This sets a priority order for fund transfer.- If the first nominee is unavailable (e.g., has passed away), the next one in line receives the funds. Example: If A is the first nominee but can’t receive the funds, they go to B. If B is also unavailable, they go to C. This ensures your money always reaches someone you trust, even if the first nominee is unable to claim it.

Bank Locker Nomination: What’s Changed?

The updated amendment also covers bank lockers by introducing a change in the nomination process. Unlike deposit accounts, which allow both simultaneous and successive nominations, only successive nominations are allowed for lockers. This means that if the primary nominee is unavailable, the next person in line will receive access to the locker.

Banks’ net income likely to decline 4% on margin pressure due to rate cuts

New Delhi. Banks are in for a bad quarter in March both in terms of net income and high pricing for liabilities, say analysts. A preview of earnings of 19 listed banks is likely to show their net profit has declined by 4% year-on-year in March quarter, mainly due to pressure on net interest margins (NIM) as a result of rate cut by the Reserve Bank, as per analysts. The profit decline is led by private sector lenders and not public sector lenders, the traditional laggards. Additionally, analysts expect a contraction in the NIM to the tune of 5-8 bps for the March quarter.

They expect NIM to remain under pressure in Q1FY26. As per Elara Capital, the first six months of FY26 may be characterised by strained liquidity, softer loan growth, pressure on NIM, and sustained vulnerability in Micro finance institutions (MFIs) and unsecured segments. There are more pain areas for banks as loan growth is expected to further slowdown amid low demand in certain secured products, stress in unsecured segment, and a high credit to deposit ratio system-wide. The only silver-line is that banks are set to gain from softening of bond yields, boosting their treasury income, they say. As per analysts, private banks are set to see their net income declining by 5.3%, while state-owned banks may see it much lower at 2.5%.

The net interest income has been impacted due to moderation in credit disbursements and some policy transmission by way of lowering the prices of existing loans after the repo rate cut in the February review. However, treasury gains from softening yields may partly compensate for subdued net interest income in Q45, said Karan Gupta, a director and head of financial institutions at India Ratings.

Crude oil import up by 4.2% to 242 MT in FY25

New Delhi. The country’s crude oil imports rose by 4.2% to 242.4 million tonne (MT) in FY25, according to the government data. The data also showed that India’s crude oil import dependency increased slightly from 88.6% in March 2024 to 89.1% in March 2025.

In FY24, the country imported 232.7 MT, reflecting an increase of 9.7 MT. The import bill of crude and petroleum products increased from \$156.3 billion in FY24 to \$161 billion in FY25

Gas imports saw an increase of 15.4% in the financial year ending March 2025, with total imports reaching 36,699 million standard cubic meters (MMSCM), compared to the previous year. In contrast, domestic gas production during the same period declined by 0.9%, falling to 36,113 MMSCM. The data also highlights a continued fall in domestic crude oil production. The total crude production dropped from 29.4 MT in FY24 to 28.7 MT in FY25.

Additionally, India’s crude oil basket witnessed a steady decline in average prices, falling from \$84.49 per barrel in March 2024 to \$77.33 in February 2025, and further down to \$72.47 in March 2025. The drop of over \$12 per barrel within a year indicates that India is paying significantly less for imported oil, providing some relief to the national import bill.

The consumption also increased by 2.1% to 239.2 MT in FY25, compared to 234.3 MT in FY 24. High-speed diesel (HSD) consumption grew by 2.0%, Motor Spirit (MS or petrol) consumption showed a more substantial increase of 7.5%, and LPG consumption rose by 5.6%. In terms of export, petroleum, oil, and lubricants (POL) products grew by 3.3% in FY25 compared to the previous year. The key drivers behind this growth in POL exports were increased shipments of several key products, including motor spirit (MS), commonly known as gasoline, petcoke/CBFS (Coke Breeze Fines Slurry), and fuel oil.

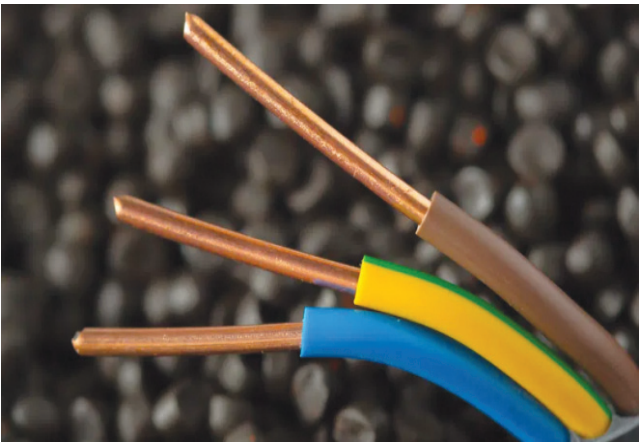
Is copper the next gold Anil Agarwal of Vedanta thinks so: Here’s why

Kolkata. If you are attracted by gold, be prepared for the a different gold in future. Anil Agarwal, chairman of Vedanta believes that copper is the next gold and has stated it on social media, holding out a lot of promise for Indian entrepreneurs. Vedanta is a significant player in the global copper market. Led by Anil Agarwal, it enjoys a 36% market share in India. The company is set to expand internationally, rolling out a \$2 billion copper processing unit which will cater to the rising global demand for the metal. The tailwinds to the copper industry is led by the aggressive shift to renewable energy and electric vehicles. With the acquisition of Konkola Copper Mines, a copper mining and smelting company in Zambia, Vedanta has turned into a fully integrated copper producer. Incidentally, copper price projections for 2025 are mixed. Some analysts have predicted record highs driven by robust demand from the shift to renewable energy and electric

vehicles, while some apprehend downward pressure from US tariff turmoil and other factors.

Super metal of the future

However, the Vedanta boss recently underscored copper’s growing strategic value and termed it as the “next gold” in a world intent on transitioning to electric vehicles and clean, green energy. “Copper is the next gold,” Agarwal wrote and mentioned how Barrick Gold, which is a gold producing company based in Canada and one of the largest in the world is dropping the world gold from its name and marking an emphasis on copper mining. “Copper is the new super metal which is being heavily used in every advanced technology, whether EVs, renewable energy infrastructure, AI or defence equipment,” Agarwal said. “A great opportunity for young entrepreneurs and investors. Let’s make



it a mission,” wrote Agarwal. One of the significant recent developments that suggest buoyancy in the copper sector is the name change of Barrick Gold Corporation. This Canada-headquartered company has mining operations and projects in numerous countries such as Argentina, Canada,

Chile, Côte d’Ivoire, Congo, Dominican Republic, Ecuador, Egypt, Mali, Pakistan, Papua New Guinea, Peru, Saudi Arabia, Senegal, Tanzania, the US and Zambia. The company said this week that they are dropping the world gold from the name and turning itself into Barrick Mining Corporation to finetune its business model and focus on copper mining. Incidentally, Barrick Mining Corporation is the second largest gold producer in the world. Incidentally, one can invest in copper commodity futures in India through the Multi-Commodity Exchange and one needs to open a commodity trading account with a broker. However, one should do so only after consultation with a qualified commodity investment expert.

Ford pauses shipments of SUVs, sports cars and other models to China

NEW DELHI. Ford Motor Co. has suspended exports of its SUVs, pickup trucks, and sports cars to China due to retaliatory tariffs imposed amid ongoing trade tensions under former President Donald Trump, the Wall Street Journal reported on Friday. This week, the automaker halted shipments of its F-150 Raptors, Mustangs, Michigan-built Bronco SUVs, and Kentucky-made Lincoln Navigators to the Chinese market, according to reports. “We have adjusted exports from the U.S. to China in light of the current tariffs,” Ford said in a statement. The export pause is attributed to escalating tariffs, with China targeting U.S. vehicle imports in response to U.S. trade measures. According to the WSJ, the China export business represents a small but



profitable operation for Ford. The automaker began shipping some of its most-recognizable nameplates to the country about a decade ago, in part to burnish its brand image amongst Chinese car buyers. The company earned approximately USD 900 million in operating profit from its China operations last year, Ford Vice

Chairman John Lawler said at a recent conference. Ford’s exports of US-built engines and transmissions to China are expected to continue despite the pause on exports of assembled vehicles. Its Lincoln Nautilus model, which is manufactured in China, is also expected to have continued shipments, despite heavy tariffs. In 2024, Ford shipped about 5,500 Broncos, F-150s, Mustangs, and Navigators to China—a sharp decline from the annual average of over 20,000 vehicles shipped over the past decade. While the company has halted exports of assembled vehicles, shipments of US-built engines and transmissions to China have continued, according to sources familiar with Ford’s operations.

Indian Stock Markets Rally Over 4.5% In Holiday-Shortened Week

New Delhi. Indian benchmark indices wrapped up the week on a strong recovery by surging over 4.5 per cent -- driven by positive signals from both domestic and global factors, experts said on Saturday. The benchmark indices opened with significant gains and continued to build momentum throughout the week. As the week ended, both the Nifty and Sensex closed near their highs at 23,851.65 and 78,553.20, respectively. “The Nifty index has been trading within a range of 21,700–23,800 for the past couple of months and has now reached the higher end of this range. It has also reclaimed important moving averages -- the 100 and 200-day EMAs,” said Ajit Mishra - SVP, Research, Religare Broking Limited. As the positive momentum continues, there is potential for the index to target the 24,250–24,600

zone in the coming weeks,” he added. Banking stocks were the standout performers, rallying due to easing retail inflation data and a favourable monsoon forecast. This fuelled



optimism about potential rate cuts by the Reserve Bank of India (RBI). The positive sentiment was further boosted by optimism surrounding deferrals of tariffs and exemptions for select products, raising hopes that trade tensions might ease in the future. There were no major negative

surprises from global markets, which also helped sustain the bullish sentiment. These developments helped to support the rally throughout the week. “The decline in the volatility index (India VIX) also signals a reduction in market uncertainty after a period of recent volatility,” Mishra mentioned. “Looking ahead, the current recovery trend seems likely to continue. A ‘buy on dips’ strategy is recommended as long as the Nifty stays above the 23,000 mark,” he added. According to Bajaj Broking Research report, volatility is expected to remain elevated amid tariff-related development and the progress of the Q4 earnings season. “Dips if any in the coming week should be used as buying opportunity with key support placed at 23,200 levels,” the report said.

S. Korea's Steel Exports To US Shrink 19% In March On Trump Tariffs

Washington's duty-free quotas for steel imports from South Korea and other countries have also been abolished.

New Delhi. South Korea's exports of steel products to the United States declined nearly 19 percent from a year earlier in March, data showed on Friday, a possible outcome of heavy tariffs imposed by the Donald Trump administration on all steel imports starting last month. Outbound shipments of steel products to the U.S. came to US\$340 million in March, down 18.9 percent from the same month last year, according to the data compiled by the Korea International Trade Association (KITA), reports Yonhap news agency. The decrease came as the Trump administration began imposing 25 percent tariffs on all steel imports on March 12 (U.S. time) as part of its broader tariff scheme aimed at reducing America’s trade deficits and bolstering



local manufacturing. Washington's duty-free quotas for steel imports from South Korea and other countries have also been abolished. Industry watchers said it is difficult to assess the impact of U.S. tariffs on Seoul's steel exports as transactions are usually made months ahead, but that there may still have been some influence. Korean steelmakers have been devising response measures

to the U.S. tariffs, with some companies planning to increase their production in the U.S. Hyundai Steel Co. plans to invest \$5.8 billion to construct an electric arc furnace-based steel mill in Louisiana by 2029, its first overseas production facility. South Korean exports will likely come under the substantive influence of U.S. tariffs starting in the second quarter, the trade

minister said, pledging "swift" support measures for affected industries. "Local industries are feeling a growing sense of unease as unprecedented uncertainties persist," Trade Minister Cheong In-kyo said in a meeting with export-related officials, noting the impact of tariffs imposed by the Donald Trump administration is anticipated to materialize in the second quarter. Cheong said the government will work together with related authorities to closely monitor export conditions in each region and "swiftly" devise measures to ease challenges faced by local exporters. The government has announced plans to inject trillions of won in financial support to help exporters weather the effects of Washington's hefty tariffs on key items, including steel, aluminum and automobiles. In the first quarter, South Korea's outbound shipments decreased 2.1 percent from a year earlier to US\$159.8 billion on the weak performance of the auto and machinery sectors, according to government data.



YoY decline in its net profit to Rs 7,033 crore for the fourth quarter ended March 2025 quarter (Q4 FY25) on April 17. Besides training, IT Giant Infosys is also extending financial support. Impacted trainees will receive one month’s salary, accommodation, and a travel allowance from the company’s Mysore training facility to either Bengaluru or their hometowns.

Systematic persecution: India slams Bangladesh over Hindu leader's killing

India on Saturday reacted strongly to the abduction and killing of a Hindu leader in Bangladesh, calling upon the Muhammad Yunus-led interim government to 'live up to its responsibility of protecting all minorities, including Hindus.'

New Delhi. India on Saturday reacted strongly to the abduction and killing of a Hindu leader in Bangladesh, calling upon the Muhammad Yunus-led interim government to "live up to its responsibility of protecting all minorities, including Hindus."

"We have noted with distress the abduction and brutal killing of Shri Bhabesh Chandra Roy, a Hindu minority leader in Bangladesh," Ministry of External Affairs official spokesperson Randhir Jaiswal said in a statement. "This killing follows a pattern of systematic persecution of Hindu minorities under the interim government even as the perpetrators of previous such events roam with impunity," Jaiswal further said.

Reiterating India's earlier stance on minorities, Jaiswal added, "We



condemn this incident and once again remind the interim government to live up to its responsibility of protecting all minorities, including Hindus, without inventing excuses or making distinctions."

Last year, following the arrest of Hindu monk Chinmoy Krishna Das at Dhaka airport, India repeatedly reminded Bangladesh of its duty to protect the rights of minorities. Even Jaiswal urged the Yunus administration to protect minorities, while stating that the reported acts of violence against minorities can't be dismissed as "media exaggeration." According to

local media reports on Friday, the body of 58-year-old Bhabesh Chandra Roy was recovered on Thursday night after he was allegedly kidnapped from his house in north Bangladesh.

Roy's wife told The Daily Star that he had received a call around 4:30 pm, allegedly made by the accused to find out if he was present at that time. She further claimed that her husband was forcefully taken from their premises half an hour later and taken to Narabari village, where he was allegedly beaten up.

When Roy was sent back to his home in an unconscious state, the neighbours rushed him to a nearby hospital, where he was declared dead.

According to local reports, the police are yet to locate the suspects in connection to Roy's brutal murder.

5.8 magnitude quake hits Afghanistan border, tremors felt in Kashmir, Delhi-NCR



New Delhi. A 5.8 magnitude earthquake struck the Afghanistan-Tajikistan border region on Saturday afternoon, triggering tremors that were felt across parts of northern India, including Kashmir and Delhi-NCR. According to the National Centre for Seismology (NCS), the earthquake occurred at 12:17 PM IST at a depth of 86 km beneath the surface. The epicentre was located in the Afghanistan-Tajikistan border area, a region prone to seismic activity due to tectonic movements. Mild to moderate tremors were felt in the Kashmir Valley and Delhi-NCR, prompting panic among residents. A video from Kashmir showed people rushing out of a building moments after the ground began to shake.

A local resident in Srinagar said, "I felt the tremor while I was in the office-my chair started shaking. It wasn't too mild or too strong. I'm not sure if there's been any damage, but earthquakes are fairly common in this region."

There were no immediate reports of casualties or major damage from either side of the border.

MCD attaches property of school in Karol Bagh for non-payment of tax

NEW DELHI. Taking a stern action for non-payment of property tax, the Municipal Corporation of Delhi (MCD) has taken action against Satbhawan Arya Girls Senior Secondary School, located on Padam Singh Road in Karol Bagh. The civic agency stated that the property was attached under Section 156A of the DMC Act in response to the school's persistent default since the financial year 2004-05. Despite multiple opportunities and repeated notices issued under Sections 175, 123D, 153, 154(1), 156, and 446 of the DMC Act, the school management failed to clear its dues. The department had even received a written commitment from the school to make a part payment of Rs 7.5 lakh, which was never honored. To date, not a single rupee has been paid against the outstanding demand, the civic agency said.

As part of the enforcement action, MCD officials have sealed the Chairman's office, Principal's office, and other administrative areas of the school premises, while ensuring that classrooms remain unaffected to avoid disruption of academic activities, it further said. "The MCD reiterates its commitment to strict enforcement of property tax regulations and urges all taxpayers to settle their dues in a timely and accurate manner. Timely payment of taxes is essential for the delivery of civic services and infrastructure development across the city," a statement released on Friday said.

110 hospitals in Delhi asked to roll out Ayushman Bharat scheme

NEW DELHI. Days after signing the Memorandum of Association (MoU) with the Centre to roll out the Ayushman Bharat scheme in the city, the Health Department has directed more than 100 hospitals to implement the same at the earliest, official sources said.

Officials said contract letters have been sent to these hospitals to enter into an agreement with the Delhi government with a direction to sign them as soon as possible. "The department has issued an advisory for the implementation of the Ayushman Bharat Yojana in 110 hospitals. As part of the initiative, a copy of the contract letter has been sent to these hospitals to enter



into an agreement with the Delhi government," an official said.

Along with this, the guidelines for implementation have also been shared with all the associated hospitals, the official added. Officials said the hospitals have been asked to sign the agreement as soon as possible so that the beneficiaries of Ayushman Yojana do not face any problems in availing healthcare services.

The BJP-led Delhi government inked an MoU with the Centre on April 5 to implement the Ayushman Bharat Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana (AB-PMJAY) in the city. With this, Delhi has become the 35th state/Union Territory to implement the health insurance scheme.

The Ayushman Bharat scheme provides free and cashless treatment for 1,961 medical procedures across 27 specialties, covering the costs of medicines, diagnostic services, hospitalisation, ICU care, surgeries and more. Under the scheme, eligible families in Delhi will receive annual health coverage of up to Rs 10 lakh—Rs 5 lakh from the Centre and an additional Rs 5 lakh as a top-up from the Delhi government.

The BJP, which formed the government in Delhi in Feb after more than 26 years, approved the implementation of the scheme at its first cabinet meeting held right after Gupta and six of her ministers took the oath of office on Feb 20.

India to get 8 new Cheetahs from Botswana, first 4 to arrive in May

Over Rs 112 crore has been spent on the cheetah project in India so far, with nearly 67% of the total funds directed toward cheetah rehabilitation efforts in Madhya Pradesh.

NEW DELHI. Eight cheetahs will be brought to India from Botswana in southern Africa in two phases, including four by May, officials have said. A release from the Madhya Pradesh government said this information was given by officials of the National Tiger Conservation Authority (NTCA), who took part in a review meeting of the cheetah project here on Friday in the presence of Union Minister for Environment, Forests & Climate Change Bhupender Yadav and MP Chief Minister Mohan Yadav.

"Efforts are underway to bring more cheetahs from South Africa, Botswana, and Kenya to India. Eight cheetahs will be brought to India in two phases. There is a plan to bring four cheetahs from Botswana to India by May. After



this, four more cheetahs will be brought. At present, consent is being developed on an agreement between India and Kenya," the release quoted NTCA officials as saying.

In the meeting, NTCA officials informed that more than Rs 112 crore has been spent on the cheetah project in the country so far, of which 67 per cent has gone into cheetah rehabilitation in

Madhya Pradesh, the release stated. "Under Project Cheetah, cheetahs will now be relocated in a phased manner to Gandhi Sagar Sanctuary.

The sanctuary is adjacent to the border of Rajasthan, so an in-principle agreement has been reached between Madhya Pradesh and Rajasthan to establish an inter-state cheetah conservation area," the release said. Special training is being given to "cheetah mitras" in Kuno National Park and Gandhi Sagar Sanctuary to enhance their capacity, it added.

In the meeting, forest officials informed that there were 26 cheetahs at Kuno National Park, including 16 in the open forest and 10 in the rehabilitation centre (enclosures).

Frame policy on smartphone use: Delhi government tells schools after HC ruling

NEW DELHI. Nearly two weeks after the Delhi High Court ruling, the Delhi government has directed schools to formulate policies regarding smartphone usage of students. The HC had outlined guiding principles to strike a balance between the advantages and potential drawbacks of allowing students to use smartphones while in school.

Accordingly, the education department has instructed all heads of government, government-aided, and unaided recognised private schools to develop and implement a school-level policy on this matter. In its circular dated April 17, 2025, the Directorate of Education said, "The court has drawn up guiding principles to balance the beneficial and deleterious effect of permitting the use of smartphones in the hands of students while attending the school. Accordingly, all the Heads of Govt., Govt. Aided & Unaided Recognised Private Schools of Delhi are hereby directed to develop a policy on the above said matter on school level and implement the same." On March 3, the



HC ruled that the use of smartphones does not have a negative impact on teaching, discipline or the overall educational environment in the classroom.

The judgment passed by Justice Anup Jairam Bhambhani came during the hearing of a petition filed by a student, who sought the issuance of guidelines regarding the use of mobile phones in schools. The HC noted that its intent

was to establish guiding principles to balance the positive and negative effects of allowing students to use smartphones while attending school. Schools should have the discretion to implement policies that fit their unique situations, whether that involves allowing limited use of smartphones in specified areas of the school or enforcing stricter bans, including bans during specific times and events.

HC-appointed panel bats for unified cell to track civic services in Delhi

The panel also suggested amending current laws to clearly define the powers and duties of different bodies. It has recommended posting experienced officers from IAS (AGMUT), DANICS, and DASS cadres to DDA, NDMC, and MCD.

NEW DELHI. After the drowning of three young UPSC aspirants in a waterlogged basement in Old Rajinder Nagar, a high-level committee set up by the Delhi High Court has recommended the creation of a "Centralised Coordination Cell" under the Department of Urban Development of the city government. The cell would ensure



better cooperation between agencies, including MCD, DDA, NDMC, DJB, and Delhi Cantonment Board.

The coaching centre had been illegally running a library in the basement, in violation of safety rules, officials said. In its report, the committee, which includes the chief secretary of Delhi, police commissioner, and officials from MCD, NDMC, and DDA, stressed that the capital's growing challenges, including rapid urbanisation and unauthorised construction, require immediate reforms.

A digital dashboard has been proposed to track services and projects run by various agencies, train staff in inter-agency coordination, digital tools, and efficient public service delivery.

The panel also suggested amending current laws to clearly define the powers and duties of different bodies. It has recommended posting experienced officers from IAS (AGMUT), DANICS, and DASS cadres to DDA, NDMC, and MCD.

The report called for collaboration with private companies, research institutions, and think tanks to develop long-term solutions for urban governance.

One of the key concerns raised was the unsafe and overcrowded living conditions in coaching hubs such as Mukherjee Nagar, Karol Bagh, and Laxmi Nagar. Students live in cramped rooms despite paying high rents.

The panel suggested their relocation to better-equipped areas. It underlined serious issues with the water supply, sewage, and drainage systems, which suffer from shortages, pollution and inefficiency.

The HC may take up the report for a hearing on April 23.

NEWS BOX

Indian student, 21, 'fatally struck' by stray bullet in Canada shooting incident

world. A 21-year-old Indian student died after getting caught in a crossfire between two groups in Canada. Hamilton Police said Harsimrat Randhawa was waiting at a bus stop when a stray bullet struck her during a shooting incident involving two vehicles.Randhawa, a student of Mohawk College in Hamilton, Ontario, was on her way to work when the incident happened. She is the fourth Indian to have died in Canada in the past four months.The Consulate General of India in Toronto said Randhawa was an innocent bystander when she was "fatally struck" by a stray bullet."We are deeply saddened by the tragic death of Indian student Harsimrat Randhawa... As per local police, she was an innocent victim, fatally struck by a stray bullet during a shooting incident involving two vehicles. A homicide investigation is currently underway. We are in close contact with her family and are extending all necessary assistance," it tweeted.In a statement, Hamilton Police said the shooting happened near Upper James and South Bend Road streets. Randhawa was found with a gunshot wound to her chest by the police. She was rushed to a nearby hospital, but succumbed.

Massive dust storm turns day to darkness in New Mexico and Texas

world. A strong dust storm swept across southern New Mexico and western Texas on Thursday afternoon, April 17, creating hazardous road conditions for drivers. The dramatic scene was captured in a time-lapse satellite video shared by the National Oceanic and Atmospheric Administration (NOAA) on Friday. The video shows the storm unfolding over nearly two hours—from 12:30 to 2:22 p.m. Mountain Time — blanketing the region in thick clouds of dust. The NOAA described the storm as "dangerous" and warned the public of serious travel hazards. The National Weather Service (NWS) has issued several dust storm warnings across the region. The blowing dust reduced road visibility to an alarmingly low level, making it very hazardous for motorists.Regional news sources indicated that the dust storm was the cause of at least one fatal crash in southern New Mexico. Officials are continuing to investigate, but they did verify that low visibility due to the storm was a contributing factor. What Caused the Dust Storm? Dust storms typically form when powerful wind gusts sweep over dry terrain, lifting loose dirt and sand into the air. These storms often arrive quickly and without much warning, turning clear skies into blinding brownouts in minutes. The storm covered a large area and moved swiftly, making it especially dangerous. Experts say spring is the peak season for dust storms in this region due to drought conditions and shifting climate patterns. Safety Precautions Advised by Officials Authorities are urging the public to stay indoors during dust storms and avoid driving when visibility drops. NOAA and NWS continue to monitor conditions and will issue further alerts if more storms are expected in the coming days.

US Supreme Court temporarily halts new deportations under 18th century wartime law invoked by Trump

WASHINGTON.The US Supreme Court on Saturday blocked, for now, the deportations of any Venezuelans held in northern Texas under an 18th century wartime law.In a brief order, the court directed the Trump administration not to remove Venezuelans held in the Bluebonnet Detention Center "until further order of this court." Justices Clarence Thomas and Samuel Alito dissented. The high court acted in an emergency appeal from the American Civil Liberties Union (ACLU) contending that immigration authorities appeared to be moving to restart removals under the Alien Enemies Act of 1798.Two federal judges refused to step in and the US 5th Circuit Court of Appeals has yet to act.The ACLU on Friday unsuccessfully asked two federal judges to order the Trump administration not to deport any Venezuelans held in northern Texas under an 18th century wartime law, contending that immigration authorities appeared to be moving to restart removals despite the US Supreme Court's restrictions on how it can use the act.Later in the day, the ACLU filed emergency petitions with both the Fifth Circuit Court of Appeals and the US Supreme Court itself to halt the deportations, even as one of the judges said it raised legitimate concerns but he could not issue an order.The group has already sued to block deportations under the Alien Enemies Act of 1798 of two Venezuelans held in the Bluebonnet Detention Center and is asking a judge to issue an order barring removals of any immigrants in the region under the law.In an emergency filing early Friday, the ACLU warned that immigration authorities were accusing other Venezuelan men held there of being members of the Tren de Aragua gang, which would make them subject to President Donald Trump's use of the act.

The act has only been invoked three previous times in US history, most recently during World War II to hold Japanese-American civilians in internment camps. The Trump administration contended it gave them power to swiftly remove immigrants they identified as members of the gang, regardless of their immigration status.

Tufts student challenging immigration arrest must be transferred to Vermont: US judge

world. A federal judge ordered President Donald Trump's administration on Friday to transfer a Tufts University student being held in Louisiana to Vermont while he weighs her claims that US immigration authorities unlawfully arrested her based on her pro-Palestinian advocacy. The decision by US District Judge William Sessions in Burlington marked an early victory for Turkish national Rumeysa Ozturk, 30, in her continuing bid to be released from the US Immigration and Customs Enforcement agency's custody and return to her studies following her March 25 arrest in Massachusetts.Sessions said Ozturk "has raised significant constitutional concerns with her arrest and detention which merit full and fair consideration in this forum," and he scheduled a May 9 hearing to consider releasing her on bail.He said Ozturk's evidence supported her claim that she was detained to punish her for co-authoring an

opinion piece in Tufts' student newspaper that criticized the school's response to calls by students to divest from companies with ties to Israel after the onset of war and to "acknowledge the Palestinian genocide." Sessions said Ozturk presented evidence to support finding her free-speech rights under the U.S. Constitution were violated, saying the "op-ed is self-evidently speech regarding public issues.""The government has so far offered no evidence to support an alternative, lawful motivation or purpose for Ms. Ozturk's detention," Sessions, an appointee of Democratic President Bill Clinton, wrote.The judge stayed the effect of his order for four days to allow for a potential appeal. He also scheduled arguments on the merits of Ozturk's case on



May 22.The U.S. Department of Homeland Security, which oversees ICE, had no comment.Jessie Rossman, a lawyer for Ozturk with the American Civil Liberties Union of Massachusetts, in a statement called the ruling "a crucial step for upholding the rule of law in our country." Ozturk's arrest by masked agents on a street in the Boston suburb of Somerville was captured in a viral video that has turned her

case into a high-profile example of the Republican president's efforts to deport pro-Palestinian activists on U.S. campuses who have spoken out against Israel's war in Gaza as part of his hardline approach to immigration.Ozturk is a PhD student and Fulbright scholar studying at Tufts, located in Massachusetts. She was arrested after the U.S. State Department revoked her student visa, citing the opinion piece.Sessions during an April 14 hearing questioned whether the administration would insist it could not release Ozturk even if he declared her arrest unlawful, potentially resulting in a "constitutional crisis."His question echoed broader concerns raised by legal experts and Democrats in recent weeks about whether the Trump administration would comply with unfavorable rulings amid tensions with the federal judiciary.

Trump shares 'doctored' pic of deported man's tattoos to prove MS-13 gang link



world. It seems US President Donald Trump won't just give up on linking Kilmar Garcia, who was wrongly deported to El Salvador, to the gang MS-13. In his latest post, Trump shared a photo that he claimed to be of Garcia's knuckles with MS-13 tattooed on them. However, experts and hawk-eyed X users pointed out that the image was photoshopped.Trump's post featured a

black-and-white photo of a man's knuckles with the letters "MS-13" above four symbols: a marijuana leaf, a smiley face, a cross and a skull. Trump asserted that he was elected as President to take "bad people out of the US" and he must be allowed to do his job."This is the hand of the man that the Democrats feel should be brought back to the United States, because he is such

'a fine and innocent person'. They said he is not a member of MS-13, even though he's got MS-13 tattooed onto his knuckles, and two highly respected courts found that he was a member of MS-13, beat up his wife, etc.," Trump tweeted.Trump's claim has been called out by former senators and several users on X.Linda Higgins, a former Minnesota state senator, said, "Hey old man, have someone teach you about photoshop. This is an excellent example of altering a photo, in this case, to make your illegal actions look good. But instead you look foolish."Garcia, who has lived in America for about 14 years, was deported to El Salvador last month despite a US immigration court order blocking his removal.The Trump administration expelled him under the Alien Enemies Act based on a 2019 accusation by police that he was an MS-13 gang member. However, it later described it as "an administrative error" but insisted that he was an MS-13 member.The Salvadoran gang MS-13 has been designated .

'Opposition Never Consulted On Foreign Policy By Modi Govt' says Former EAM Salman Khurshid

UPDATED. As the Modi government celebrates the extradition of Tahawwur Rana — accused of involvement in the 2008 Mumbai terror attacks — one senior Congress leader is reminding the nation that such victories are built on years of groundwork. In this exclusive interview, Salman Khurshid, former External Affairs Minister, pulls back the curtain on what it really takes to bring a high-profile terror suspect home, crediting earlier efforts under the UPA and highlighting the long, often invisible diplomatic process that precedes such moments.But Khurshid doesn't stop there. As Congress seeks to revive its global standing and ideological relevance, during the upcoming Bharat Summit in Telangana, he outlines a renewed outreach to like-minded international actors — from engaging the UK Labour Party before its recent rise to power, to co-hosting a landmark gathering of global progressives in Telangana. For a party

pushing social justice at home, Khurshid says the time has come to also shape the conversation abroad. **Question:** How can this group create alliances with like-minded leaders? And what does "like-minded" mean when it comes to the Congress party — particularly in the context of voices in India that think differently from the conservatives and the right wing? What is it that you aim to achieve here? **Salman Khurshid:** Well, let's be very, very clear. we felt three years ago that we had sort of drifted away from contact points as far as foreign policy and international relations were concerned. We had been preoccupied with repeated elections at home, preoccupied with one crisis after another — COVID being part of it, etc. And we thought then, let's go back and make inroads with people who think like us, who would respond to what our concerns are.So, we started off with the

Labour Party conference, where we had the good fortune to meet a lot of people who were compatible with the Labour Party because they have a section where they invite people from across the globe. We met a lot of people, including members of the Progressive Alliance, and we thought this was a good place to start — to see if the world is getting divided into a right-wing conservative point of view, which seemed to be moving towards dominance, with the exception of the Labour Party. The Labour Party displaced the Conservatives in the UK, and that was the opening that we had. We followed it up with an outreach to a lot of people — a lot of parties across the globe, some in government, some not in government. And as we went along, we came across this very ambitious programme by our government in Telangana, which is part of their larger perception of "Telangana Rising.

world. A planned joint naval exercise between Pakistan and Sri Lanka in the strategically significant waters off Trincomalee was quietly shelved a few weeks ago after India raised objections with Colombo, multiple sources have told PTI. The proposed drills, which were part of the routine military engagements between the two countries, were called off following New Delhi's intervention, the sources said. Trincomalee, located on Sri Lanka's northeastern coast, holds immense strategic value in the Indian Ocean region. Military experts say the natural harbour has the potential to dominate the Bay of Bengal and much of the northeast Indian Ocean-making it a critical point of interest for India's maritime security calculus.The timing of the planned naval exercise, which was set to take place just weeks ahead of Prime Minister Narendra Modi's visit to Colombo, added to India's unease. Though there was no official word from Sri Lanka or Pakistan regarding the decision to halt the exercise, it is understood that India communicated its apprehensions directly to Sri Lankan authorities, prompting the cancellation.The Sri Lankan and Pakistani navies share longstanding cordial relations, frequently exchanging port visits and conducting joint training operations. However, India's discomfort stems from Pakistan's close naval ties with China's People's Liberation Army Navy. The presence of Pakistani warships in Trincomalee, experts suggest, could have potentially opened avenues for increased Chinese maritime activity in the region.

New Delhi's concerns are not without precedent. In August 2022, the docking of the Chinese missile and satellite tracking ship 'Yuan Wang' at Hambantota port led to a diplomatic standoff between India and Sri Lanka. A year later, another Chinese naval vessel docked at Colombo port, once again sparking concerns in India.Over the past few years, India has taken significant steps to bolster its strategic footprint in Sri Lanka, particularly in Trincomalee. The region is central to India's plans to help develop Sri Lanka's energy infrastructure. During PM Modi's recent visit, India, Sri Lanka, and the United Arab Emirates signed a landmark agreement to transform Trincomalee into a regional energy hub aimed at supporting the island nation's energy security and economic recovery. In another milestone, India and Sri Lanka signed a defence pact to institutionalise military cooperation-marking a major shift in bilateral defence ties, nearly four decades after the Indian Peace Keeping Force's intervention strained relations between the two nations. India has steadily ramped up its defence support to Sri Lanka in recent years, including handing over a Dornier maritime surveillance aircraft from the Indian Navy's fleet in 2022 to meet Colombo's immediate security needs.

Iran told the United States in talks last week it was ready to accept some limits on its uranium enrichment but needed water-tight guarantees that President Donald Trump would not again ditch a nuclear pact.

Moscow. Iran believes reaching an agreement on its nuclear programme with the United States is possible as long as Washington is realistic, Foreign Minister Abbas Araqchi said on Friday on the eve of a second round of talks with the Trump administration.

"If they demonstrate seriousness of intent and do not make unrealistic demands, reaching agreements is possible," Araqchi told a news conference in Moscow after talks with Foreign Minister Sergei Lavrov of Russia.Iran had noted the United States' seriousness during a first round of talks on the deal, which took place in Oman last week, Araqchi said. The second round is set for Saturday in Rome and will be held through Omani Foreign Minister Badr al-Busaidi, Iran's foreign ministry spokesperson, Esmail Baghaei, said."Given the contradictory positions we have heard from various US officials over the past few days, we expect the US side to first provide an explanation in this regard and to remove the serious ambiguities that have arisen regarding its intentions and seriousness," Baghaei told state media without elaborating.Iran told the United States in talks last week it was ready to accept some limits on its uranium

enrichment but needed water-tight guarantees that President Donald Trump would not again ditch a nuclear pact, a senior Iranian official said on Friday.Trump has threatened to attack Iran



if it does not reach a deal with the US over its nuclear programme, which Iran says is peaceful but the West says is aimed at building an atomic bomb."I'm for stopping Iran, very simply, from having a nuclear weapon. They can't have a nuclear weapon. I want Iran to be great and prosperous and

terrific," Trump told reporters on Friday when asked if he would consider letting Tehran keep a civil nuclear programme. Lavrov said Russia was "ready to assist, mediate and play any role that will be beneficial to Iran and the U.S.A." Moscow has played a role in Iran's nuclear negotiations in the past as a veto-wielding UN Security Council member and signatory to an earlier deal that Trump abandoned during his first term in 2018. Iranian Supreme Leader Ali Khamenei sent Araqchi to Moscow with a letter for President Vladimir Putin to brief the Kremlin about the negotiations. Araqchi will also visit Beijing within the next few days, the Iranian state news agency IRNA reported on Friday, without providing further details.US Secretary of State Marco Rubio said earlier on Friday that the US administration is looking for a peaceful solution with Iran but will never tolerate the country developing a nuclear weapon.

NEWS BOX

Ravi Bishnoi going from strength to strength after slow start: LSG coach Klusener

New Delhi Lucknow Super Giants assistant coach Lance Klusener feels that Ravi Bishnoi is going from strength to strength after a slow start to life in IPL 2025. Bishnoi was expected to be the lead spinner for LSG this season after being one of the players who was retained by the franchise ahead of the auction.

However, Bishnoi struggled for control in the initial games but has come into form and now has 8 wickets in 7 matches. Speaking to reporters ahead of the RR game, Klusener said that Bishnoi has gotten better as the tournament has progressed. The LSG coach said that it is difficult to always get the spinners to complete their full quota of overs, as Bishnoi bowled just 3 overs in the loss to CSK. Klusener said that LSG are expecting a big performance from Bishnoi in his hometown of Jaipur. "I think he's been going from strength to strength, especially to his



own high standards. He probably had a bit of a slow start, but as the tournament has progressed, he's only gotten better. I thought he played a good hand in the last game too. And with Markram bowling four overs of spin, I thought he bowled extremely well. It's not always easy to get everyone's quota in, especially when you're bowling 11 overs of spin. But overall, Ravi is just getting better and better. He's back in his home state and hometown, and we're looking forward to another strong performance from him," said Klusener.

50-50 game vs RR
Speaking about the RR game, Klusener said that LSG won't be underestimating their opponents despite losing 5 games out of 7. Klusener said that he doesn't believe in past results and expects it to be a 50-50 contest in Jaipur. "I don't think it's easy for anyone. Tomorrow is a new day and a new game. If I'm not mistaken, this is your second home game, and you've always played well at home.

IPL 2025: Nehal Wadhera celebrates perfect outing vs RCB, poses with Virat Kohli

New Delhi . Punjab Kings batter Nehal Wadhera had a perfect day out on April 18—from scoring a match-winning knock to guide his side to a win against Royal Challengers Bengaluru, to showcasing some eye-catching celebrations after the match, along with a special social media post featuring Virat Kohli. Although Wadhera played a key role in handing Kohli's RCB their third straight home defeat in IPL 2025, the 24-year-old PBKS batter didn't shy away from posing for a picture with the RCB and India star. In the rain-reduced 14-overs-a-side clash at the Chinnaswamy on Friday, PBKS restricted RCB to 95, and then Wadhera's unbeaten 33 off 19 balls guided PBKS to a hard-fought 5-wicket win. While his composed knock—especially when other PBKS batters were struggling on a rain-



affected Chinnaswamy pitch—won praise, so did his fiery celebration after finishing the game.

RCB vs PBKS, IPL 2025 Highlights
Even after the match, Wadhera took to his Instagram account to share a picture with RCB's main man Kohli, which he got clicked post-match. In his caption, he also hyped fans up for the upcoming rematch against the same opponents on April 20. "The winning streak continues Coming back home, see you there," the caption read. In IPL 2025, Wadhera has been one of the key batters behind PBKS's successful campaign so far, scoring 184 runs in six matches at an average of 46 and a strike rate of 149.59. As PBKS continue to rise under Shreyas Iyer's captaincy and Ricky Ponting's guidance, Nehal Wadhera's batting form remains crucial to their hunt for a maiden IPL title.

Shush: R Ashwin stops panelist from talking about MS Dhoni during YouTube show

➡R Ashwin announced earlier that he wouldn't discuss CSK game in his YouTube show

➡Ashwin was careful about an MS Dhoni reference in his latest show

➡Ashwin was dropped from CSK's last game against LSG in

New Delhi Off-spinner R Ashwin was involved in a bit of banter during the latest episode of his YouTube show. The Chennai Super Kings star reminded his panellists - former cricketer Vidyut Sivaramakrishnan and Strength and Conditioning coach Rajamani Prabhu - not to discuss MS Dhoni or anything related to the team during the IPL 2025 season. Ashwin was seen shushing Rajamani Prabhu when he began talking about MS Dhoni and his captaincy. The hilarious on-air moment came weeks after Ashwin announced he would not be discussing Chennai Super Kings on his show this IPL season, having returned to the five-



time champions for the first time in a decade. While talking about captaincy during their show earlier this week, Rajamani Prabhu began praising the likes of Shreyas Iyer and MS Dhoni, pointing out how the CSK skipper led from the front in their win over Lucknow Super Giants. Will Lionel Messi play 2026 FIFA World Cup? Argentina legend clarifies

IPL turns 18: When Brendon McCullum's record 158 kick started cricket's new era
Indian student killed in Canada by stray bullet during shooting incident "Shush, that shouldn't be spoken here," Ashwin said, gesturing to Rajamani to drop the topic. "You shouldn't be talking about it (CSK). I can. I am a member of the audience," Rajamani responded with a smile. "Hey, we decided we

won't talk about our own team. When we were with Rajasthan Royals, we didn't talk about them. So, let's not," Ashwin added, as the three panellists enjoyed the light-hearted exchange. Ashwin had faced flak earlier in the season after his panellists discussed the Super Kings on his channel during the first two weeks of IPL 2025. Analyst Prasanna Aghoram and others were critical of some of CSK's decisions during their five-match losing streak. Following the backlash, Ashwin pulled down an episode reviewing a CSK match and later announced that his team would not analyse Super Kings' games for the remainder of the season. Ashwin himself has been going through a lean patch in IPL 2025. The veteran off-spinner, who took six wickets in six matches at an economy rate close to 10, was dropped for CSK's clash against LSG in Lucknow. In Ashwin's absence, Ravindra Jadeja and Noor Ahmad led the spin attack. CSK delivered an improved performance, restricting LSG to 166 and chasing down the target with four balls to spare. Chennai, who remain at the bottom of the table with just two wins in six matches, will next face arch-rivals Mumbai Indians at the Wankhede Stadium on Sunday, April 20.

Scotland, England in talks over forming combined Britain team at LA Olympics 2028

New Delhi Cricket Scotland chief executive Trudy Lindblade said that her board and the England and Wales Cricket Board (ECB) are in discussions about forming a unified British cricket team for the 2028 Los Angeles Olympics. The cricket tournament at LA28 will mark the sport's return to the Olympics after 128 years. Cricket last appeared at the Olympics in Paris 1900, where Great Britain beat France by 158 runs in a one-off final after the Netherlands and Belgium withdrew. Earlier this week, the International Olympic Committee (IOC) confirmed that the LA28 cricket programme will include six-team men's and women's T20 events, with each team allowed to field a 15-member squad.

STORIES YOU MAY LIKE
We have a really good working relationship with the ECB, so we have been in talks with them and are in the process of establishing a



Team GB cricket entity," Lindblade told the BBC. England are currently ranked second in men's T20s and third in women's, while Scotland are not in the top ten in either format. "That's what's required by the British Olympic Association (BOA) for a British team to compete at the Olympic Games. So it's really interesting - with six teams in the competition, we would have an opportunity through the GB concept." "So, exciting times,

and we'll continue to liaise with the ECB and our colleagues at LA28 and the ICC. It will be interesting." The ECB echoed this sentiment, reaffirming its commitment to ongoing discussions and emphasizing the broader opportunity to promote cricket. "With England and Wales also set to host World Cups in 2026 and 2030, LA 2028 presents another great chance to grow the game and inspire new audiences," a spokesperson told ESPNcricinfo. Athletes from the United Kingdom typically compete as part of a unified Team GB at the Olympics. A notable exception is men's football, where disagreements among the UK nations have prevented Britain from fielding a team in recent decades, except for the London 2012 Games. The British Olympic Association (BOA) hopes to field a unified men's football team at the 2028 Games, the first since London 2012.

Rohit Sharma honoured to have stand named after him at Wankhede: Unreal feeling

➡Mumbai Indians beat Sunrisers Hyderabad by four wickets

➡SRH scored 162/5 in their allotted 20 overs batting first

➡MI chased down the target in 18.1 overs as Will Jacks top scored

New Delhi stand named after him at the iconic Wankhede Stadium in Mumbai. Earlier this month, on Tuesday, April 15, the Mumbai Cricket Association (MCA) approved a proposal to name one of the stands after the Indian captain during the association's Annual General Meeting (AGM). Batting great Ajit Wadekar and former BCCI president Sharad Pawar are the others to have stands at the Wankhede, the MCA confirmed. Milind Narvekar, an



MCA apex council member, put forward the names of Rohit, Wadekar and Pawar for approval. The Divecha Pavilion Level 3 will now be named Rohit Sharma Stand. Legendary cricketers like Sachin Tendulkar, Vijay Merchant, Sunil Gavaskar, and Dilip Vengsarkar also have stands named after them at the Wankhede Stadium. The 37-year-old Rohit was overwhelmed by the honour, having represented India for 18 years since his debut back in 2007. "Now to sit back and think that there is going to be a stadium stand in my game, it is such an unreal feeling. It is something that I have

never thought of and I will be forever grateful for this big honour in my life," Rohit said at the inauguration ceremony of the third edition of the Mumbai T20 League, scheduled to get underway on May 26. "When you start playing the game, you don't know how long you are going to play the game for; let alone all these milestones and achievements that you achieve while playing the game. But to get this kind of honour, having a stand named after you, is something that I cannot imagine," Rohit said. "But once I see my name there on the stand, it will be a very emotional moment for me and like I said, from not having to enter the stadium and now to have a stand, those two moments, so much has happened between these two moments so I am forever grateful," Rohit added.

Rohit Sharma shining for Team India
Rohit has had his fair share of success in the last 12 months or so. He led India to glory in the Men's T20 World Cup last year in the West Indies and United States. Last month, India also won the Champions Trophy 2025 under his leadership.



dig, suggesting that taking a two-week Maldives vacation mid-season is apparently part of the job description. After DC's emphatic win over Chennai Super Kings on April 5, Pietersen had left the squad for a personal trip to Maldives, missing the April 10 clash against Royal Challengers Bengaluru but returning in time for their game against Mumbai Indians on April 13. DC's official social media handle uploaded the amusing exchange between Rahul and Pietersen, which has since gone viral, leaving fans in splits. It isn't the first time the duo have indulged in such entertaining banter. After the CSK game, during a post-match chat, Rahul jokingly reminded Pietersen of the time he had compared Rahul's batting style to watching paint dry on a wall. Even during Rahul's birthday celebrations with the DC squad, Pietersen was seen smashing cake on the 32-year-old wicketkeeper-batter's face.

RCB's top 5-6 batters must bat for 20 overs: Josh Hazlewood on fixing home woes

➡Hazlewood urged RCB top order to bat entire innings

➡RCB's home form under scrutiny after third straight loss

➡Tim David's fifty the only highlight in weak total vs PBKS

New Delhi . Royal Challengers Bengaluru have not been able to get the better of their home woes in the ongoing IPL 2025, suffering their third consecutive defeat at the M. Chinnaswamy Stadium after losing to PBKS on April 18. While the team continues to search for a winning formula, their star

pacer Josh Hazlewood believes that if RCB's top order bats out the full 20 overs, it could be the key to turning things around at home.

RCB have won all four of their away games so far in IPL 2025, giving them a decent start to the season. However, their disastrous home record has spelt frequent trouble for the franchise as they continue their pursuit of a maiden IPL title. Following the 5-wicket loss to PBKS on Friday, RCB's understanding of their home conditions has come under the scanner. Speaking at the post-match press conference, Hazlewood shared his thoughts on the issue. He opined that RCB's top 5 to 6 batters need to take control of the run momentum and bat through the innings, which could significantly improve their chances of success at home.

"It's not a typical Chinnaswamy wicket. Obviously, the bounce has always been there, but in the past, it's probably been more

consistent. I find that if you really hit that six-to-eight metre length hard, it's quite tough to bat on—and we've definitely found that this season," Hazlewood said. "Maybe it's just



about the bowlers pulling back a touch and giving themselves a bit of time to assess. In the first two games we lost here, it was one batter from the opposition going big, forming a partnership, and scoring heavily late in the innings... So if we can have our top

five or top six batting through the 20 overs, I think that'll go a long way in helping us win at home," he added.

RCB vs PBKS: As it happened
In the Friday clash at the Chinnaswamy, it was yet another batting collapse that cost RCB two vital points. The rain-affected match was reduced to 14 overs per side. Batting first, RCB's star-studded lineup failed to deliver on what is usually considered a batting-friendly surface at their home ground.

With the top order crumbling, it was only thanks to Tim David's unbeaten 50 off 26 deliveries that the side managed to reach 95 runs. However, the total proved insufficient for the RCB bowling attack—featuring the likes of Hazlewood, Bhuvneshwar Kumar, and Suyash Sharma—as PBKS batter Nehal Wadhera guided his team home with an unbeaten 33 off 19 balls. RCB will now be looking to bounce back from the defeat and

Sophie Choudry

Praises Hrithik Roshan For His Humility Towards Fans Amid US Tour Mismanagement Backlash

The singer also mentioned about the best side of Roshan during their US tour and said, “You know, unkno chot bhi lagi hui thi lekin phirbhi wo apne fans ke liye (he was hurt unknown but still for his fans he) wants to put his best foot forward. He really has a lot of gratitude in his heart aur woh dikhta hai (and it shows).” In the same interview, Choudry also talked about unknown anecdotes from Hrithik’s life. She continued, “And unhone bahut saari kahaniya share ki jaise ki Kaho Naa Pyaar Hai se pehele unke daddy ne unse kaha tha ki ‘Shayad aap ko main aisi film nhi dunga, you have to work for it.’ Toh woh auditions pe jaa rahe the and (And he shared many stories like before Kaho Naa Pyaar Hai his daddy told him that ‘maybe I will not make such a film for you, you have to work for it.’ So he was going for auditions) he was auditioning for Shekhar Kapur. When his dad found out and called him nana nana tum wapas aao (No no, you come back), things like that.”



Sophie even revealed that the actor has a stage fright and was seen seemingly impressed with the way he has mesmerised everyone with his incredible performances. “Things about how somebody like him has stage fright. You can’t even imagine he is so incredible on stage you can’t even imagine. Just things on how he worked on himself, how things were tough. At one point, he wanted to give up. Then, suddenly Krishh came and he decided to channel that energy to be a superhero,” she elaborated.

In the concluding note, Sophie even mentioned, “We have spent time with him, he is so inspirational and he is very real. Woh ek superstar hai and dikhne mein Greek God (He is a superstar and looks like a Greek God) but he is also just a guy who wants to be the best person and the best father and I think that is really special. So I’m very privileged that I spent that time with Hrithik.”

Earlier, the singer-turned-actress posted a couple of moments with Roshan from their US tour and wrote an appreciative note for him on Instagram.



Sharvari

Says Alpha Is The Most Challenging Film Of Her Career For This Reason

Sharvari’s career took off last year after the massive success of horror comedy Munjya, followed by her role in the film Maharaj. Later, she showcased her fierce side in Vedaa with John Abraham. The actress is now set to be a part of YRF Spy Universe’s first female-led movie alongside Alia Bhatt. Sharvari recently sat down for a chat wherein she shared her excitement to be a part of the film Alpha.

Speaking with Hindustan Times, Sharvari shared, “I’m really looking forward to bringing this film to the theatres, especially because it is the first spy universe film with two women that is leading it.” She continued, “It truly is the first women’s action film. And I think that it will break a lot of glass ceilings. So, I’m excited and a little bit nervous about the film. I am keeping my fingers crossed about the same.”

For Sharvari, the YRF Spy Universe project is something different since it’s an action movie. While she has earlier been a part of Vedaa, which also featured action sequences, Alpha is a departure from her previous work. Sharvari also opened up on the challenges that came her way while working in Alpha.



She said, “What challenged me was the genre of the film, which is action. The genre is something that I have not done before,” adding, “It was very different from the work that I had done before. The most challenging part would definitely be this.” Alpha, directed by Shiv Rawail, will see Sharvari and Alia Bhatt in the roles of secret agents. The film is part of the YRF Spy Universe, which began in 2012 with Salman Khan and Katrina Kaif’s Ek Tha Tiger. It was followed by a sequel, Tiger Zinda Hai, which was released in 2017. Then came War, starring Hrithik Roshan and Tiger Shroff. Pathaan, featuring Shah Rukh Khan and Deepika Padukone, was released in 2023. Later, the third installment in the Tiger franchise made it to the theatres.

Next up in the YRF Spy Universe will be Alia Bhatt and Sharvari’s film, which will hit theatres on December 25 this year. War 2 is also lined up for release this year. Hrithik Roshan reprises his role as Kabir Dhaliwal while Jr NTR plays the antagonist.

Priya Prakash Varrier Dances To Suriya-Pooja Hegde’s Track Kanimaa. BRB, Watching It On Loop



Priya Prakash Varrier is riding high on the success of her latest film, Good Bad Ugly, headlined by Ajith Kumar. The movie, directed by Adhik Ravichandran, arrived in the theatres on April 10. But now, Priya is making the headlines for another reason. On Thursday, the actress dropped a video on her Instagram Stories where she was seen grooving to the beats of the song Kanimaa. The upbeat track is a part of the upcoming Tamil-language action romance Retro, featuring Suriya and Pooja Hegde. The clip opens to Priya Prakash Varrier and her friend matching steps to Kanimaa. The original song played on the television behind them. Priya, dressed in a beige bodycon outfit, dances her heart out with a beaming smile on her face. The actress’s friend matches her energy perfectly. The duo also manages to pull off the viral hookstep, performed by Retro’s lead cast.

Kanimaa, sung and composed by Santhosh Narayanan, has struck the right chord with the masses. The track was unveiled by the makers of Retro on March 21. Retro, directed by Karthik Subbaraj, also features Jayaram, Joju George, Karunakaran, Prashanth, Shriya Saran, Prakash Raj and Sujith Shanker in key roles. The film will hit the silver screens on May 1.

Coming back to Priya Prakash Varrier, the actress played a key role in Good Bad Ugly. Not long ago, she penned a heartfelt note for her co-star Ajith Kumar on Instagram. Calling herself a “fan”, the actress admitted that she learnt a lot from the Tamil star. A part of what Priya Prakash Varrier wrote was, “Anything I write isn’t enough to express the kind of admiration I’ve for you, Sir. From the very first conversation to the last day of the shoot, you made me feel like I belonged. You made sure that nobody felt left out. You always went that extra mile to check on all of us whenever you were on set.”

Nikita Dutta Reveals Jaideep Ahlawat Gave Her A Unique Acting Lesson



Actress Nikita Dutta is eyeing the release of her upcoming film Jewel Thief. Ahead of the film’s release, she is pulling out all stops to keep the buzz among audiences soaring. Now, the actress sat for an interview where she candidly spoke about her co-star Jaideep Ahlawat. She recalled how the actor, known for movies like Paatal Lok, Gangs of Wasseyapur and Raazi, gives her random suggestions that actually work for her during difficult scenes. During the conversation with Instant Bollywood, she was asked whether the characters played by Jaideep Ahlawat have always been serious. Everyone has this thought in their mind that how disciplined he is and how serious he would be off-camera as well. I would love you to break that ice. Is he really that person, that serious off camera?

Responding to this, Nikita revealed, “He is not serious like that as a personality off-camera. He is actually a lot of fun. There was one scene in which I had to hold a cigarette, and I don’t smoke at all. So I was really struggling with how to hold it. And I was really struggling with what was looking nicer on camera, what is comfortable kya hai, and whether I should blow here or there. So, I was so lost in that, and then he just casually gave me some suggestions where I didn’t even have to, like, do anything. He did something. After that, I was like, How?”

Elaborating further, she said that this was not the first time Jaideep gave her random suggestions. “This isn’t once. Inhone do teen baar unhone mujhe aise hi random suggestions diye ki aap aise karte dekh lo. Wo bade quietly aakar bol dete hai, bade casually. (This isn’t once. Two or three times he gave me random suggestions like this, that you should try this. He comes and gives the suggestions very politely, very casually),” she added.

Coming to Jewel Thief: The Heist Begins, Kookie Gulati and Robbie Grewal’s directorial will start streaming on Netflix from April 25. The high-octane heist thriller, spanning exotic locales—Budapest, Istanbul, and Mumbai—is penned by Sumit Aroraa and produced by Siddharth Anand and Mamta Anand under their Marflix production. Jewel Thief stars Saif Ali Khan, Jaideep Ahlawat, Kunal Kapoor, and Nikita Dutta in lead roles. Jaideep Ahlawat will be seen as Aulak in the film, a powerful tycoon obsessed with acquiring Africa’s most precious diamond, Red Sun. To steal it, he hires a mysterious thief (played by Saif Ali Khan), but Kunal Kapoor plays the relentless cop determined to catch him. Nikita’s character, married to the antagonist, adds a mysterious layer with a hinted history with the thief.